सार संसार

अप्रैल-जून, 2018

वर्ष : 23 पूर्णांक : 90 अप्रैल-जून 2018 अंक : 2

मुख्य सम्पादक
अमृत मेहता

हमारी वेबसाइट
www. saarsansaar.com
Email : saarsansaar@gmail.com

मूल्य :
एक प्रति : 20 रुपये
वार्षिक : 80 रुपये

Subscription
Single Copy : Rs. 20.00
Annual : Rs.: 80.00

प्रकाशक : **अमृत मेहता**
जे-3/सी, लाजपत नगर III
नई दिल्ली-110024
मुख्य सम्पादक : अमृत मेहता
प्रकाशन अवधि : त्रैमासिक
शबऊन्द संयोजन : देवेन्द्र कुमार शर्मा
मुद्रक : पूजा ऑफसेट प्रिंटर्स
मूल्य : 20 रुपये : (एक प्रति)
: 80 रुपये (वार्षिक)
मुख पृष्ठ : **रूथ क्ल्यूगर**

Published by
Amrit Mehta
at
J-3/C, Lajpat Nagar–III
New Delhi–110024

मुख्य सम्पादक
अमृत मेहता
जे-3/सी
लाजपत नगर-III
नई दिल्ली—110024

सम्पादक मंडल
रिज़वानुर रहमान
अरबी एवं अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी,
नई दिल्ली-110067

देवेन्द्र सिंह रावत
स्कूल ऑफ़ लैंग्वेजस
जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी,
नई दिल्ली/110067

डागमार मारकोवा
चार्ल्स यूनिवर्सिटी, प्राग

बाबली मैत्र सराफ़
इन्द्रप्रस्थ महिला कॉलेज,
दिल्ली यूनिवर्सिटी,
दिल्ली-110006

प्रशान्त पांडे
271, साबरमती होस्टल,
जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी,
नई दिल्ली—110067

पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका के अंकों पर
अपनी प्रतिक्रियाएँ निम्नलिखित पते पर भेजें

देवेन्द्र कुमार शर्मा, डी-580, गली नं 4, अशोक नगर,
शाहदरा, दिल्ली-110093
या
saarsansaar@gmail.com

सम्पादक की कलम से...

अप्रैल-जून के 'सार संसार' के इस अंक में जर्मन लेखिका रूथ क्ल्यूगर की कहानी में उनकी आपबीती है। 1931 में विएना में जन्मी, बवेरिया में उच्च शिक्षा प्राप्त, यहूदी मूल की क्ल्यूगर 1947 मदन अमरीका प्रवास कर गई थीं, और अब वह यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया में प्रोफ़ेसर हैं। माता-पिता हिटलर के आऊश्वित्स के यातना शिविर में नाज़ियों की क्रू रता की बलि चढ़ गए थे, और यह स्वयं थेरेज़ियनश्टाट् के यातना शिविर में रहीं। उसी यातना शिविर के अनुभवों की कहानी इस अंक में है। इसके अलावा जर्मन प्रोफ़ेसर फ़ोल्कर नोएहॉउस द्वारा लिखित ग्युंटर ग्रास की जीवनी का अगला धारावाहिक अंश है, स्विस लेखक फ़्रांत्स होलर की पुस्तक 'प्रस्तरवृष्टि' का भी। अन्य कहानीकार स्विस रूडोल्फ पाइयर, आस्ट्रियाई ग्युंटर शटिंगल, चेक एडवर्ड पेग्नर और अफ़गान रहनवर्द ज़रयाब हैं।

आशा है कि पाठकों को अंक पसन्द आएगा।

× × ×

बालकवि बैरागी जी नहीं रहे

5 मई को हुए परम पूज्यनीय श्री बालकवि बैरागी के आकस्मिक निधन का समाचार पढ़कर उनके लाखों प्रशंसक अवश्य शोक के गहरे सागर में डूब गए होंगे। एक मनुष्य की देह के भीतर वह एक पूरी संस्था थे। संसद सदस्य थे, कवि थे, पत्रकार थे, फ़िल्मों के लिए गीत लिखते थे, 1945 से राजनीति से जुड़े, और दशकों सांसद की भूमिका निभाते हुए हिन्दी के उत्थान के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे। गूगल में उनके बारे में ढेरों के ढेरों पन्ने पढ़ने को मिल जाएँगे, लेकिन अपने इस स्तम्भ में मैं उनसे अपने तनिक से हुए सम्पर्क के बारे में लिखूँगा। यह सब अनायास ही हुआ। साहित्यिक पत्रिका 'प्रेरणा' के जनवरी 2013 के अंक में मेरा एक आलेख साहित्य

अकादमी में चल रही धाँधलियों के बारे में छपा था, अप्रैल 2013 के अंक में जिस पर कुछ प्रतिक्रियाएँ आई थीं, जिनमें से एक बालकवि जी की थी। उन्होंने लिखा था, ''यूँ तो इस अंक का प्रत्येक पृष्ठ पठनीय है, किन्तु अमृत मेहता का आलेख 'भारतीय साहित्यकार को नोबल पुरस्कार'—और सुश्री साधना अग्रवाल का आलेख 'भ्रष्टाचार के घेरे में साहित्य अकादमी' विशेषकर पढ़े जाने वाले आलेख हैं। सचमुच सारे मामले को सी.बी.आई. को सौप देना चाहिये...

मैं पढ़ कर दंग रह गया। इतना बड़ा साहित्यकार, जो अपने जीवन काल में एक दिव्य चरित्र बन चुका है, उसका मेरे आलेख के बारे में यह विचार है। विशेषकर ऐसे समय में, जब लेखकों का एक धड़ा मुझे बदनाम करने पर तुला हुआ है, बैरागी जी के ये उदगार मेरे लिए अत्यन्त प्रेरणादायक थे। उनकी टिप्पणी के साथ ही उनका पता भी लिखा था। मैंने तबसे उस पते पर अपनी पत्रिका भेजनी शुरू कर दी। उसके बाद जितना स्नेह मुझे उनके पत्रों में मिला, वह अविर्णीय रहा। कई बार तो अगला अंक आने से पहले दो पत्र आ जाते थे, और उनके उद्‌गारों में इतना अपनापन होता था, जैसे मुझे जन्म-जन्म से जानते हों। पत्रों को छापते समय मैं उनकी उत्साहवर्धक, लेकिन असम्बद्ध टिप्पणियों को नहीं छापता था। लेकिन इस अंक के लिए मुझे उनका अन्तिम पत्र मिला है, उसे मैं पूरा छाप रहा हूँ, जिससे हमारे पाठक जान पाएँगे कि उनके मन में प्रेम का एक स्रोत था, और ढोंग और भ्रष्टाचार के प्रति अपनी गहरी जुगुप्सा तो वह अपने कई पत्रों में पहले ही जता चुके थे :

आदरणीय श्री अमृत मेहता जी,
शुभम्
सब कृपा है भगवान् की।
आशा है कि आप भी सपरिवार आनन्द से होंगे।
आपकी अगली विदेश यात्रा की रूपरेखा बन चुकी होगी।
आज की डाक से मुझे सार संसार जनवरी-मार्च 2018 अंक मिल गया।
पूरा अंक पढ़ने लायक सामग्री से भरा पड़ा है।
आपके परिश्रम की जय हो।
उस अंक में आपने मेरे दो पत्र छाप दिए हैं। आपके पाठक और आलोचक उन्हें पढेंगे ज़रूर। मुझे प्रसन्नता होगी।

आपने स्व. पूज्य पं. भवानी प्रसाद मिश्र को उनके पारिवारिक नाम ''मन्ना'' की जगह ''मन्ता'' बना दिया है। वैसे ही आपने स्वयं के पते में 'लाजपत नगर' को 'लाजपल नगर' छापा है। ये भूलें वर्तनी (प्रूफ़) की हैं. अपने प्रूफ़रीडर को समझाने

की कोशिश करें।

सभी को मेरा समादर दें। कृपा बनाए रखें और समय-समय पर सुधि लेते रहें। नया वर्ष आपके यश को और अधिक बढ़ाएगा। मैं आश्वस्त हूँ।

मंगलम!!

सादर

बालकवि वैरागी

अपने स्नेहपात्रों पर इतना प्रेम उड़ेलने वाले वैरागी जी आज नहीं रहे। गत पाँच वर्षों में मेरा उन्हें यह लिखने का साहस नहीं हुआ कि दिल्ली आएँ और मिलने का सौभाग्य दें। आज पछता रहा हूँ कि क्यों नहीं लिखा।

''सार संसार'' परिवार की ओर से मैं स्व. श्री बालकवि वैरागी को प्यार भरी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

नीचे उनकी एक मनपसन्द कविता है, जो उनकी क्रान्तिकारी शुद्ध मनोवृत्ति को उजागर करती है।

हैं करोड़ों सूर्य लेकिन सूर्य हैं बस नाम के
जो न दें हमको उजाला वे भला किस काम के?
जो रात भर लड़ता रहे उस दीप को दीजे दुआ
सूर्य से वह श्रेष्ठ है तुच्छ है तो क्या हुआ?
वक्त आने पर मिला ले हाथ जो अँधियारे से
सम्बन्ध उनका कुछ नहीं है सूर्य के परिवार से।।

चिट्ठी आई है

आज की डाक से मुझे जनवरी-मार्च 2018 अंक मिल चुका है। पूरा अंक पढ़ने लायक सामग्री से भरा पड़ा है। आपके परिश्रम की जय हो। इस अंक में आपने मेरे दो पत्र छापे हैं। आपके पाठक और आलोचक ज़रूर पढ़ेंगे। मुझे प्रसन्नता होगी। आपने स्व. पूज्य श्री भवानी प्रसाद मिश्र को उनके पारिवारिक नाम 'मन्ना' की जगह 'मन्ता' छाप दिया है। वैसे ही आपके स्वयं के पते में 'लाजपत नगर' को 'लाजपल नगर' छापा है। अपने प्रूफ़ रीडर को समझाने की कृपा करें। समय समय पर सुधि लेते रहें। वर्ष 2018 में आपका यश और अधिक बढ़ेगा। मैं आश्वस्त हूँ।

—बालकवी बैरागी, मनासा

मुझे उक्त अंक मिला। हार्दिक धन्यवाद। आप अद्वितीय कार्य कर रहे हैं, अपने संसाधनों से पत्रिका निकालना कितना कठिन कार्य है, मैं जानता ही हूँ।

इस अंक में आपका यात्रा आख्यान और ग्रास की जीवनी का अंश अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लेख है। लघुकथाएँ भी अच्छी हैं। मेरी बधाई स्वीकार करें।

—शैलेन्द्र सागर, सम्पादक, कथाक्रम

अनुक्रम

बेचारा बाज़ीगर	11
एक था गाँव	18
प्रस्तरवृष्टि	20
बीतते समय के विरुद्ध लेखन	32
पतंगबाज़	42
टेरेज़ीएनश्ट्याट	48
कौन सी बीवी ?	55
हिटलर की फ़ौज के लिए कर्प मछलियाँ	59

बेचारा बाज़ीगर

ग्युंटर शटिंगल अनुवाद : शिप्रा चतुर्वेदी

तीन घंटों से धारा-प्रवाह बारिश हो रही थी। खस्ता-हाल कोट के कॉलर को ऊपर चढ़ाए, पिचकी हुई हैट को नीचे चेहरे तक खिसकाए हुए वह एक घर के प्रवेश-द्वार के नीचे खड़ा था। उसे बरसात से चिढ़ थी, बचपन से ही वह बरसात से नफ़रत करता था। जैसे ही उसने ध्यान दिया कि उसकी गहरी भूरी हैट का छेद दिख रहा था उसने उसे सिर से उतार लिया और गड़बड़ी पर ध्यान दिया। सड़क पर आधे घंटे से कोई भी नहीं गुज़रा था। वे सभी लोग, जिन्हें कोई ख़ास ज़रूरत नहीं थी, घर पर ही थे। उसने कल्पना की, कैसे वे अपने आरामदायक गर्म कमरों में बैठे होंगे जबकि वह खुले में खड़ा था और ठिठुर रहा था।

ऐसी स्थिति में पहले वह भी बाहर नहीं खड़ा होता था। वह पुरानी बातें याद भी नहीं करना चाहता था क्योंकि इससे उसकी स्थिति में कोई सुधार नहीं आने वाला था, पर वह अपने विचारों को वर्तमान में केन्द्रित करने में सफल नहीं हो सका। पहले वह एक लड़की के साथ उसके कमरे में होता था या वह लड़की उसे उसकी आवासीय गाड़ी में ढूँढ़ लेती थी, पर यह तय था कि दोनों एक दूसरे के साथ मज़ा करते।

औरतों के बारे में अपनी असाधारण सफलता पर उसने उन दिनों कभी विशेष ध्यान नहीं दिया था, बस उसने इसे सामान्य से कुछ ज़्यादा मान लिया था। उसने कभी इस पर भी विचार नहीं किया था क्यों वह अपनी योग्यताओं का उपयोग और लोगों को अचम्भित करने के लिए करता था। कितनी बार उसने लोगों को अपनी उँगलियों की सफ़ाई से अचम्भित कर दिया था। एक दिन जब उसने कहा, ''कल सुबह पानी बरसेगा!'' तो लोग मुस्कराए या उसका मज़ाक उड़ाया। पर अगले दिन पाँच बजे जब वास्तव में पानी बरसने लगा, पहले धीरे-धीरे, फिर ज़ोर से, फिर और ज़ोर से, इतना कि लोग मैदान से भागने लगे और उन्हें पेड़ों के नीचे शरण लेनी पड़ी तो फिर उन्होंने उसका मज़ाक नहीं उड़ाया।

जब उसने कहा, ''आज हमारा व्यापार अच्छा होगा'', तो उन्होंने प्रत्युत्तर दिया,

''शायद आप सही कह रहे हैं!'' और वह सही सिद्ध हुआ। उसकी जादूगरी के वे करतब, जिन्हें वह उत्साही जनता के समक्ष अक्सर छोटे-छोटे यन्त्रों की मदद से प्रस्तुत करता था जब सफल होने लगे और उसकी भविष्यवाणियाँ भी लगातार सच होने लगीं तो लोग धीरे-धीरे डरने लगे।

लोगों ने उससे पूछा कि वह यह सब कैसे करता है तो उसने बस कन्धे उचकाए और एक रहस्य भरी दृष्टि से उनकी ओर देखा। कुछ लोग, अधिकतर जवान लड़कियाँ और बच्चे, कुछ डर का अनुभव करते और वहाँ से भाग जाते। एक बार उसने सोचा, ''इसे मैं नहीं भागने दूँगा!'' उसने महसूस किया कि वह भी यह चाहती थी, लेकिन वह साहस नहीं कर सका। उसने सिर्फ़ क्रोध भरी आक्रामक दृष्टि से उसे देखा। वह वहीं पर ऐसे खड़ी रह गई मानो उसकी जड़ें वहाँ गड़ी हों, फिर वह उसे हाथ पकड़कर अपनी आवासीय गाड़ी में ले गया।

समय के साथ-साथ वह लोकप्रिय व अनुभवी होता गया। काफ़ी समय से अब ऐसा कभी नहीं होता था कि कोई उसे बीच में टोके और उसे उसकी योजना से विचलित कर सके। हँसने वाले लगातार उसकी ओर होते थे जबकि उसकी भी हँसने की हिम्मत नहीं होती थी। बल्कि यों कहिए कि उसे लगातार विदूषक की भूमिका अदा करना बोझ लगने लगा था। इस बात से उसे कोई सरोकार नहीं था कि ऐसे में वह बढ़िया कमाई कर रहा था और उसके साथियों को उससे ईर्ष्या होती। बाद में जब वह शाम को अपनी कमाई गिनता तो वह ध्यान देता कि उसने अपनी प्रतिष्ठा के साथ न्याय नहीं किया है। तब उसे अपनी गलती पर बड़ी चिढ़ आती।

किसलिए उसे इसका ज़िक्र करना पड़ा कि हम सब जादूगर हैं जो छोटी-मोटी तरकीबों से जीवन की कठिनाइयों पर लगभग बिना किसी नुकसान के विजय पाने का प्रयास करते हैं? वह इस स्थिति से अपने आपको बचा सकता था! लोग ऐसी बात सुनना पसन्द नहीं करते हैं। लेकिन ऐसा न करके क्या इससे उसने लोगों को यह अनुभूति दी कि वे उससे बेहतर हैं। फिर उसके यहाँ नकदी ने दस्तक दी।

पैसे से उसने कुछ ख़ास नहीं किया, यूँ ही उड़ा दिया, मधुशालाओं में जाकर जमकर पिया, घमंडी औरतों के कमरे में जाने के लिए खर्च किया, क्योंकि जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ती जा रही थी, उनकी कृपा दृष्टि पाने के लिए उसे उनको ज़्यादा पैसे देने पड़ते थे।

ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि इस बीच उसके सम्मान में बहुत कमी आ गई थी। एक दिन लोगों ने उससे फिर से भविष्यवाणी करने का आह्वान किया, उसने इशारे से मना किया, पर वे तब तक नहीं माने जब तक कि उसने कुछ भविष्यवाणी कर नहीं

दी। तब जाकर उन्होंने उसे चैन लेने दिया। पूरा दिन बहुत व्यस्त रहा था और वह तुरन्त सोने जाना चाहता था। उसे अपनी की हुई भविष्यवाणी पर विश्वास नहीं था, उसने पेट में एक अलग तरह की हलचल महसूस की और अचानक उसके सिर में तेज़ दर्द होने लगा।

आश्चर्य नहीं हुआ कि उसने पहली बार मना किया। इसलिए लोग उसका मज़ाक उड़ाते थे। वह गुस्से में चिल्लाया, आखिर उन्हें चुप होना पड़ा। वह उन्हें सिर्फ़ भ्रमित करना चाहता था। पर वे उस पर विश्वास नहीं कर पाए क्योंकि इसके पहले वह कभी इतना उत्तेजित नहीं हुआ था और न ही इतनी ज़ोर से चिल्लाया था। इस दिन के बाद से उसने किसी घटना की पूर्व सूचना नहीं दी। उसमें यह प्रतिभा थी क्योंकि उसने अपनी पिछली सफलताओं को महज़ एक इत्तेफ़ाक से नहीं पाया था। लेकिन उतनी ही शीघ्रता से उसने उसे खो दिया जितनी तेज़ी से पाया था।

तिरपन वर्ष की अवस्था में उसने एक एक गलत निर्णय लिया। एक रेस्तराँ की विधवा मालकिन से उसके सम्बन्ध थे, जो उससे शादी करना चाहती थी। पर उसने मना कर दिया, यद्यपि उसका काम मंदा चल रहा था और उसे यह महसूस हो गया था कि यह मन्दी कब्र तक उसका साथ देने वाली है। बात यह नहीं थी की वह मारी से प्यार नहीं करता था, बल्कि वह उसे बहुत पसन्द करता था, वहाँ जाने पर मिलने वाले स्वादिष्ट व्यंजनों का वह सम्मान करता था। बस वह अपनी स्वतन्त्रता नहीं खोना चाहता था। वह यह नहीं समझ सका कि यह स्वतन्त्रता जिसके पीछे इंसान दौड़ता रहता है, जिसकी वे एक मूर्ति की तरह पूजा करते हैं, एक भ्रम मात्र है। सो, वह अविवाहित है और बन्धनमुक्त है—पर क्या वह इसलिए स्वतन्त्र था? उसे स्वतन्त्रता थी इस प्रवेश द्वार पर खड़े रहने की या बरसात में कहीं भी घूमने की, उसे स्वतन्त्रता थी भूखे रहने की और ठिठुरने की।

वह सब उसके लिए अर्थहीन निकला क्योंकि उस सब के बारे में सोचना नहीं चाहता था। उसे यह सब बिलकुल नहीं सोचना था कि एक रेस्तराँ मालिक की तरह उसका जीवन कितना शानदार होता! वह मालिक होता, गर्म कक्ष में काउंटर के पीछे खड़ा विभिन्न प्रकार की शराब परोसता, एक अपने लिए भी, जब भी इच्छा हो, लोगों के साथ ताश खेलता, कभी उदारमना होने की स्थिति में एक राउंड मुफ्त में चलाता, इससे व्यापार बढ़ता। महिला मेहमानों से, महिला वेटरों से थोड़ी आँखें लड़ाता, इश्कबाजी करता, मूड ख़राब होने पर रसोई में काम करने वाली पर चिल्लाता, मेहमानों को अपनी जादूगरी के करतब दिखाकर उनका दिल बहलाता। उसकी वजह से यह रेस्तराँ शहर की सबसे लोकप्रिय जगह बन जाता और इसलिए

मारी को उस पर गर्व होता।

पर किसी को भी उस पर गर्व नहीं था, किसी भी इंसान को उसकी इतनी सी भी चाहत नहीं थी। अचानक ही प्रवेश-द्वार, जहाँ वह खड़ा था, खुला। वह फुर्ती से एक ओर हो गया। एक काली लिमोज़िन सड़क पर धीरे से आ गई और रुकी। गाड़ी चालक ने उसे अविश्वास भरी नज़रों से ऊपर से नीचे तक तौला। तुम वहाँ क्या कर रहे हो ?, लिमोज़िन में बैठे व्यक्ति ने उस जादूगर से पूछा।

''आप स्वयं देख सकते हैं।'' जादूगर ने अहंकारपूर्वक जवाब दिया।

''गुस्ताखी मत करो,'' गाड़ी में बैठे व्यक्ति ने धमकाते हुए कहा।

''मुझे नहीं पता था कि हम एक दूसरे से तुम करके बात कर सकते हैं।'' जादूगर बोला और गाड़ी की ओर बढ़ा। ''मेरी बला से! मेरा नाम फ्रांत्स है।'' उसने गाड़ी चालक की ओर हाथ बढ़ाया।

जब उसने उसका कोई जवाब नहीं दिया तो जादूगर ने विस्मय से कहा, ''लगता है आपको भी नहीं पता है कि आपको क्या चाहिए, श्रीमान!''

गाड़ी चालक ने उसे सिर हिलाते हुए देखा और तेज़ी से गाड़ी आगे बढ़ा दी। चूँकि उसकी गाड़ी एक पानी भरे गड्ढे से निकली सो उसने ऊपर से नीचे तक उस पर पानी डाल दिया।

जादूगर ने यह देखकर राहत की साँस ली कि पानी थम गया है। लगभग पूरी तरह से भीगे कोट को उसने टटोला। गाड़ी में बैठे उस मूर्ख ने उसे ऐसे ऊपर से नीचे तक क्यों भिगो दिया था! अचानक उसे समझ आया कि वह शोचनीय रूप से ठिठुर ही नहीं रहा है बल्कि उसे बहुत ज़ोर की भूख भी लगी है। उसे यह नहीं सोचना था कि मारी का पति होने की स्थिति में अच्छे भरपेट खाने की कमी कभी नहीं होती।

बीस मीटर की दूरी पर उसने एक बुज़ुर्ग औरत को देखा जो धीरे-धीरे उसकी ओर आ रही थी। उसने अपना भाग्य आजमाने को सोची। इस उम्र की औरतों से कुछ मिलने की सम्भावना सबसे ज़्यादा होती है। उसने साहस बटोर अपनी हैट उतारी, नीचे झुका और दीन स्वर में बोला, ''क्षमा कीजिए, दयालु महोदया, क्या आप मुझे कुछ पैसे देंगी ?''

वह औरत एक पल को ठिठकी फिर एक शब्द भी बोले बिना आगे चली गई।

दस मिनट बाद एक और औरत उसकी ओर आती दिखी, वह उम्र में पहले वाली से कुछ कम थी। अन्तिम पलों में जाकर उसका ध्यान उसके तीखे नाक-नक्श पर गया। उसने फिर से अपना वाक्य बोला और इस बार उसने यह और जोड़ दिया, ''मैंने चार दिनों से कुछ खाया नहीं है।''

इस महिला ने भी उसे कुछ देर तक ध्यान से देखा। फिर वह उसके पास खड़ी हो गई।

''आपका पेशा क्या है?''

''मैं...वो..., मैं.... था'' जादूगर शब्द उसकी ज़बान पर नहीं आ सका सो उसने कहा, ''कलाकार।''

वह महिला विस्मयपूर्वक और अविश्वास से बोली, ''ओह, आप कलाकार हैं?''

वह चुप रहा और उसने सिर झुका लिया। उसे जवाब देने में कुछ समय लगा।

''आप कैसे, बल्कि किस प्रकार के कलाकार हैं?''

फिर उसने धीरे से जवाब दिया, ''जादूगर।''

''अच्छा, जादू की कला।'' महिला ने दोहराया। कुछ पल बाद वह महिला बोली, ''मेरा अनुमान है आपकी उम्र 60 वर्ष होगी।''

उसने सिर हिलाया और बोला, ''मैं 58 वर्ष का हूँ।''

''आप बीमार हैं?''

उसने कन्धे हिलाए।

''58 वर्ष के एक स्वस्थ आदमी को भूखे मरने की ज़रूरत नहीं है। यदि आप अपनी जादूगरी की प्रतिभा का उपयोग नहीं कर सकते हैं या करना चाहते हैं तो लाखों अन्य लोगों की तरह दरबान, नौकर, सन्देशवाहक या अखबार बेचने वालों की तरह सच्चाई से पैसे कमा सकते थे!'' वह महिला बोली। ''वर्तमान में काम करने की इच्छा रखने वाले के लिए बहुत तरह के काम उपलब्ध हैं। आपकी जगह यदि मैं होती तो मुझे सड़क पर अनजाने लोगों से भिक्षा माँगने में बड़ी शर्म आती। तसल्ली से बैठ कर सोचिए। आपके भविष्य के लिए मैं आपको शुभकामनाएँ देती हूँ।''

इसके साथ ही बातचीत समाप्त कर सिर उठा कर वह वहाँ से चली गई। वह धीरे-धीरे सड़क पर चलने लगा और सोचने लगा, इस औरत ने शायद कभी भी भूख को ऐसे नहीं महसूस किया है जैसे मैं कर रहा हूँ।

अचानक उसके दिमाग़ में आया, उसके अलावा इस दुनिया में आधा अरब लोग भूख से पीड़ित हैं। यह उसने एक समाचार-पत्र में पढ़ा था, जिसे उसने बिना ध्यान दिए फेंक दिया था।

मुझे कैसे भी पैसों की जुगाड़ करनी है, इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि कैसे? जूते की एक छोटी सी दुकान के सामने वह खड़ा हो गया। दुकान में बत्ती नहीं जल रही थी। शीशे के दरवाज़े से वह आसानी से अन्दर घुस गया। उसने अपने आस-पास देखा, कोने पर खड़ी दोनों सन्देहास्पद आकृतियों पर उसने ध्यान नहीं

दिया। उसने नकदी वाली पेटी खोली, जल्दी से कुछ नोट उठा लिए। मुझे जूतों की भी ज़रूरत है, उसने सोचा, पर फिर उसे डर लगा और वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

वह उन दोनों व्यक्तियों से जा भिड़ा। एक ने उस पर पिस्तौल तान दी। दूर-दूर तक कोई नहीं दिखाई दे रहा था। डर के मारे वह मदद के लिए चिल्ला भी नहीं पाया हालाँकि इतनी देर रात में इसका कोई फायदा भी नहीं होता।

''तुमने हमसे हमारा काम छीन लिया है।'' पहला आदमी बोला, ''इधर दो।''

''पर मुझे खाने के लिए पैसे चाहिए।' जादूगर हकलाते हुए बोला।

''चलो हम एक छोटा सा तरीका निकालते हैं या तो तुम हम लोगों को यह दे दो या हम तुम्हें मार डालें। फिर तुम्हें इस पैसे की ज़रूरत भी नहीं रहेगी।'' पहले वाले ने उपहासपूर्वक कहा।

जादूगर को लगा वे लोग यह सचमुच कर देंगे। जल्दी से उसनी लूट का माल उन लोगों को सौंप दिया और वहाँ से भाग खड़ा हुआ। कुछ पल बाद जब उसने पीछे मुड़कर उन लोगों को देखना चाहा तो वे गायब हो चुके थे।

वह अगली पुलिस-चौकी तक गया। ''मैं एक रिपोर्ट लिखवाना चाहता हूँ।'' वह बोला, ''मैने एक जूतों की दुकान में सेंध लगाकर घुसकर नकदी की पेटी में से चोरी की है।''

''कितने पैसे चुराए?''

''मुझे...मुझे पता नहीं।''

''क्या हमारा मखौल उड़ाना चाहते हो?''

''नहीं, बिलकुल नहीं, पर वहाँ अँधेरा था और मेरे पास समय नहीं था पैसे गिनने का।''

''निकालो पैसे।''

''अब वे मेरे पास नहीं हैं, दो लोगों ने पिस्तौल की नोक पर मुझसे छीन लिए।''

पुलिसमैन ने अविश्वास से उसकी तरफ देखा।

''उन आदमियों का हुलिया बताओ।''

''मुझे नहीं पता, अँधेरा था।''

''यह तुम पहले ही बता चुके हो। मैं आसानी से तुम्हारी चाल में नहीं आने वाला। तुमने कहीं सेंध नहीं लगाई है यह सब करने के हिसाब से तुम बहुत कायर हो! इस बहाने से तुम जाड़े का समय जेल में बिताना चाहते हो । यह तुम्हारे लिए

सही रहता। भागो यहाँ से!''

''पर...''

''भागो यहाँ से!'' पुलिसमैन चिल्लाया और उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया।

''जा रहा हूँ,'' जादूगर धीरे से बोला।

असमंजस में वह पुलिस चौकी से निकल गया और अँधेरी गलियों में से एक में गुम हो गया।

एक था गाँव

एडुअर्ड पेग्नेर **अनुवाद : डागमार मारकोवा**

27 मई, 1942 तथाकथित 'संरक्षित राज्य बोहीमिया और मोराविया' के तथाकथित 'संरक्षक' और चेक लोगों के जल्लाद हायद्रिख़ की हत्या हो गई। हत्यारे बहुत दिन तक लापता रहे।

'देखा जाएगा,' ऐसा हिटलर ने 9 जून को शाम के कोई 7 बजे अपने अधीन चेक कठपुतली राष्ट्रपति हाख़ा से कहा।

पौने आठ बजे बर्लिन से एसएस[1] के बड़े अफ़सर फ़्रांक का फ़ोन आया, वह प्राग के सुरक्षा कमांडर बेम से बात करना चाहता था। हिटलर का सन्देश था :

''आज ही लिदित्से गाँव में ये आवश्यक कदम उठाने हैं

1. सब वयस्क पुरुषों को गोली मार देना है
2. सब औरतों को नज़रबन्दी कैंप में पहुँचाना है
3. जो बच्चे जर्मन बनने योग्य हैं, सबको इकट्ठे करके जर्मन परिवारों में पालने के लिए रखना है। बाकी बच्चों की दूसरी किस्म की देखभाल का इंतिज़ाम कराना है।

सुरक्षा उच्च अफ़सर बेम ने तुरन्त प्राग के बाकी जर्मन नाज़ी प्रधानों को सूचना दी। ज़िला शहर क्लादनो में ये सब जमा होने लगे।

लिदित्से क्यों? हिटलर के दिमाग़ में लिदित्से का नाम कैसे आया?

क्या वहाँ से गुप्त प्रसारण होता था? क्या वहाँ संरक्षक हायद्रिख़ का हत्यारा छिपा हुआ था?

क्या यहाँ हथियार भंडार था? क्या यहाँ विदेशी प्रसारण सुना जाता था? क्या यहाँ कोई हायद्रिख़ की हत्या की तारीफ़ खुले आम करता था? क्या यहाँ खानों में, ढलाईघरों में काम करने वालों में से किसी ने ऐसा कुछ किया?

1. हिटलर की फ़ौज का सबसे क्रूर और ख़तरनाक दस्ता

बिलकुल नहीं। यहाँ तक कि गाँव में एक भी यहूदी नहीं रहता था।

लिदित्से मामूली चेक गाँव था। बरबादी के लिए इत्तिफ़ाक से चुन लिया गया—एक लड़के ने स्लानी नामक शहर की एक मिल की मज़दूरिन को मामूली चिट्ठी भेज दी थी :

''प्रिय अन्नी, माफ़ करो कि देर से लिख रहा हूँ। शायद समझोगी क्योंकि तुम्हें मालूम है कि बहुत परेशान हूँ। मुझे जो करना था वो कर दिया। उस घातक रात को कहीं चाबारना बस्ती में सोया। ठीक हूँ, इस हफ़्ते मिलेंगे। और फिर मुलाकात कभी नहीं होगी।''

इस मामूली चिट्ठी के आधार पर सारा मामला शुरू हुआ। मिल-मालिक अपने मज़दूरों के पत्र देखा करता था। यह चिट्ठी उसे सन्दिग्ध लगी, इसलिए खुफ़िया पुलिस को दे दी। हालाँकि जल्द ही स्पष्ट हुआ कि प्रेम का मामूली मामला था। राजनीतिक नहीं, फिर भी लिदित्से के ख़िलाफ़ कार्रवाई को चालू किया जा चुका और इसे रोकने को कोई तैयार नहीं था।

आख़िर खुफ़िया पुलिस ने हत्यारे को फ़ौरन पकड़ना इतना ज़रूरी नहीं समझा। वे बस जल्दी से जल्दी प्रत्याक्रमण शुरू करना चाहते थे। इसलिए एक गाँव चुन लिया जिसके रहने वालों से चेक होने के इलावा कोई भी अपराध नहीं हुआ। यह सारे देश के लोगों के लिए चेतावनी होनी थी।

उस गाँव में अकसर खनिक और धातुकर्मी रहते थे। 192 पुरुष, 203 महिलाएँ और पंद्रह साल की उम्र से कम के 98 बच्चे। 102 घर थे, गिरजा था, दो कक्षाओं का स्कूल था। इस गाँव में अकसर खनिक और धातुकर्मी रहते थे। 32 घोड़े, 167 गाएँ, 150 सूअर, 144 बकरियाँ, कुछ भेड़ें, मुर्गियाँ, ख़रगोश।

जर्मनों ने मवेशो बुश्तेह्रद नामक शहर की जर्मन संपत्ति में भर दी। मवेशी तो अर्थव्यवस्था के लिए काम आएँगे।

लिदित्से के घरों की तलाशी का कोई नतीजा नहीं निकला। हत्यारों से सम्बन्ध का कोई प्रमाण नहीं मिला। तो क्या हुआ? गाँव चुना जा चुका था। उसके रहने वालों को ज़रा भी पता नहीं था, हाँ घर की तलाशियों से डरे हुए थे। लेकिन नौ जून सुबह क्लादनो शहर की खुफ़िया पुलिस के प्रतिनिधि ने कहा : ''अज कुछ हो जाएगा जो इस देश ने अज तक कभी नहीं देखा था।''

लिदित्से के रहने वालों को अब भी कुछ मालूम नहीं था।

प्रस्तरवृष्टि

फ्रांत्स होलर **अनुवाद : अमृत मेहता**

9

''नहीं, ये हमारी मुर्गियाँ नहीं हैं'', कातारीना के साथ कमरे की खिड़की से बाहर झुकी बगीचे में झाँकती बाज़े ने कहा, ''हमारी सारी चित्तीदार हैं।'' फिर उसने ताली बजाई और शी-शी की आवाज की, ''निकलो निकलो!'' और कातारीना ने भी ताली बजाई और शी-शी की।

दोनों सफ़ेद मुर्गियाँ कुड़-कुड़ करती हुई बाड़ के पास रेबन्दचीनी के पत्तों पर पहुँच गई, अपने सिर तिरछे करके भर्त्सना की मुद्रा में वे ऊपर घर की दीवार की ओर देखने लगीं।

कातारीना के पीछे कास्पार भी धक्कम-धक्का करने लगा, ''मैं भी देखूँगा।'' कातारीना ने कोहनी मारकर उसे पीछे किया, लेकिन बाज़े ने नीचे झुक कर उसकी दोनों बाँहों के नीचे हाथ डाल कर उसे अपने सामने खिड़की के फलक पर कर दिया, जिसे उसने कस कर पकड़ लिया।

''हुश-हुश!'' उसने भी आवाज़ की और फिर पूछा, ''मुर्गियाँ कहाँ हैं?''

''वहाँ, रेबन्दचीनी के पास।'' कातारीना ने कहा, फिर मध्यम परन्तु स्पष्ट स्वर में जोड़ा, ''मर जाणे।''

''मर जाणा नहीं'', कास्पार ने पलट कर जवाब दिया और उसने फिर से आवाज़ की, इस बार सही दिशा में, ''हुश-हुश! निकलो, निकलो!''

लेकिन मुर्गियाँ वहीं रहीं और गुस्से में कुड़-कुड़ करती रहीं।

ये पीछे वाले ''ब्लाइगन'' से आई होंगी, बाज़े का अनुमान था, वहाँ सफ़ेद वाली है, और कातारीना को जल्दी से भाग कर वहाँ बारबरा को जाने और उसे बता कर आने को कहा।

इसी बीच कातारीना ने कपड़े पहन लिए थे, उसने फिर से दादी की अल्मारी में खुशबू वाली उधार की स्कर्ट निकाल ली थी, और उस पर अपना ब्राउन पेटबन्द पहन लिया था। कल रविवार को पहनने वाली जो पोशाक वह पहन कर आई थी,

उसे वह कल पहनेगी, बाज़े ने उसके छोर से ब्रश से धूल झाड़ते हुए कहा था, हाँ रविावर कल है। चोटियाँ गूँध दी गई थीं, लेकिन ऊपर नहीं बाँधी गई थीं, उसके कन्धों पर झूल रही थीं वे। उसे अब सिर्फ़ जूते पहनने थे, और फिर वह जाएगी।

उसने फीतों की पहली गाँठ नहीं लगाई थी। मदद के लिए उसकी आँखें ड्योड़ी में किसी को ढूँढ़ने लगीं जहाँ वह जूतों के छोटे रैक पर बैठी हुई थी, मगर तब उसे ख़्याल आया कि उस अकेली ने सीढ़ी को चरमराने पर मजबूर कर दिया था, तो फिर वह अकेली फीते भी तो बाँध सकती थी, और अब वह एक गाँठ लगा भी बैठी थी। जब वह दोनों पैरों पर जूते पहन चुकी थी तो उसने नीची सीढ़ियों के पास दो चिलमचियों को पड़े देखा। उन्हें वापस आने के बाद वह ऊपर ले जाएगी।

पीछे वाला ''ब्लाइगन'' घर के रास्ते पर एकदम अगले वाला था। फिर भी कातारीना का वहाँ जाने का मन नहीं था। वास्तव में तो वह यह सोच कर यहाँ आई थी कि वह यहाँ कुछ दिन छुट्टी पर आई है, लेकिन पहुँचते ही उसे काम पर लगा दिया गया था, और स्वभावत: कास्पार को साथ आना ज़रूरी नहीं था, बल्कि वह बाज़े के साथ ग़रम कमरे में रह सकता था। घर में उसे कई बार तब बूढ़ी एल्ज़बेथ के पास अंडे लाने के लिए भेज दिया जाता था, जब रेस्तराँ में अंडे ख़त्म हो जाते थे, और अपने घर में भी नहीं होते थे। लेकिन वो और बात थी, क्योंकि बूढ़ी एल्ज़बेथ उसे जानती थी, उसमें से हमेशा अपने पति के तम्बाकू की गंध आती थी, और उसका पति उप्परला याग्गली था, जो लगातार खाँसता रहता था, क्योंकि उसके मुँह में हमेशा पाइप रहता था, और उसे उप्परला याग्गली इसलिए कहते थे क्योंकि नीचे वाली घाटी में एक और निचला याग्गली रहता था, 'मोएर' से लोहे के पुल को जाने वाले रास्ते पर, और निचला याग्गली भी उसे जानता था, उसकी बीवी भी, हालाँकि उसे वहाँ अण्डे लेने कभी नहीं जाना पड़ता था, यहाँ तक कि उसकी बेटी एल्ज़बेथ भी उसे जानती थी, जो एक औरत थी और जिसका कोई पति नहीं था, और इसलिए बच्चे भी नहीं थे, जो शायद उसे गलगंड होने की वजह से था, जो उसके गले पर किसी मेंढ़क की तरह चिपका हुआ था, वह कभी इसकी वजह से मर भी जाएगी, दादा की तरह, गलगंड से मौत अधिकतर ऐसे होती है कि गलगंड फूलता जाता था, जब तक कि एक दिन दम न घुट जाए। घबरा कर कातारीना ने अपना गला पकड़ लिया, और खुश हुई कि वहाँ कुछ उसका दम नहीं घोंट रहा था।

वह एक छोटे से मोड़ पर आ गई थी, जहाँ से उसे घर की छत नज़र आ रही थी, जहाँ की मुर्गियाँ उनके यहाँ आती थीं।

जिन लोगों को कातारीना नहीं जानती तो उनके यहाँ जाना उसे पसन्द नहीं था। वह सिर्फ़ इतना जानती थी कि वह हंस-कास्पार की माँ थी, जो अन्ना के साथ घर

के पीछे खड़ा होता था और कल शाम को रसोई में आया था, और वह लेना की माँ भी थी, जो उसके साथ स्कूल जाती थी। लेना के पिता नहीं रहे थे और वह हमेशा नंगे पैर आती थी। एक बार कातारीना ने उसे दरिद्रालय से मुफ़्त में बँटने वाला शोरबा लेकर आते देखा था।

अगर लेना के पिता नहीं थे, कातारीना ने सोचा, तो बारबरा का भी पति नहीं था। तो फिर खेत को कौन देखता था?

रास्ते में एक ओर खड़ी एक गाय कातारीना को ताक रही थी।

कातारीना को अपनी गायों ब्लेस और श्टेर्न की याद आई, जो इस फ़ाल्त्सअ्यूबर आल्प्स पर थीं, उनके बछड़े भी याद आए उसे। 'मोएर' में वे दूध तीसरी गाय का लेते थे, लोबे का, जो गर्मियों में वहाँ अकेली होती थी। तक़रीबन चौदह दिनों में, उसके पिता ने कुछ दिन पहले बताया था, ब्लेस और श्टेर्न लौट आएँगी, और कातारीना यह जानने को उत्सुक थी कि बछड़े कितने बड़े हो गए होंगे। दादी के पास भी दूध के लिए एक गाय पीछे रह गई थी, ब्ल्यूम्ली नाम था उसका, और कातारीना ने पाउल को कल दुहते देखा था। शेष गाएँ आल्प्स के ऊपर थीं, वह नहीं जानती थी कि कितनी।

जब वह नीचे मुड़ने वाली पगडंडी पर आई तो घर के सामने एक कुत्ता भौंक रहा था। कातारीना ठिठक गई।

घर के साथ लगे खलिहान से एक औरत बाहर निकली और इधर-उधर देखने लगी। खलिहान के फाटक पर एक गाय की पीली पड़ चुकी खोपड़ी तिरछी लटक रही थी, उसका एक सींग नीचे की ओर था। अब औरत की नज़र लड़की पर पड़ी।

''क्या चाहिए?'' उसने पुकारा।

स्पष्टत: वह नहीं जानती थी कि वहाँ कौन खड़ा था। दो छोटे लड़के घर के दरवाज़े से बाहर निकले और ऊपर ताकने लगे। इसी बीच कुत्ता भाग कर औरत के पास चला गया था, और उसके पास खड़ा होकर भौंके जा रहा था।

कातारीना ने एक क्षण सोचा कि वास्तव में वह किसलिए यहाँ आई थी और फिर बोली, ''मैं कातारीना हूँ।''

औरत को अभी भी समझ नहीं आया।

''क्या?'' वह वहीं से चिल्लाई।

वह उसे शायद भिखमंगी समझ रही थी, जो वह अपने शोर मचाते कुत्ते को गले में बँधे पट्टे से नहीं पकड़ रही थी। अब उससे ऊँची आवाज़ में बोलना तो मुमकिन नहीं था।

''मैं 'ब्लाइगन' में दादी के यहाँ से आ रही हूँ'' कातारीना जितना चिल्ला कर

कह सकती थी उसने कहा, और फिर याद करने की कोशिश करने लगी कि दादी का प्रथम नाम क्या था, क्योंकि दादी तो वह सिर्फ़ उसके लिए थी न, उस औरत के लिए तो नहीं, जो बारबरा होनी चाहिए। लेकिन अब वह शायद पहचान गई थी कि वह कौन थी, उसने कुत्ते को गर्दन से पकड़ा, उसके साथ कुछ कदम चल कर कुत्ते को झोंपड़ी की ओर ले गई और वहाँ उसे कस कर बाँधने के बाद उसने आवाज़ लगाई, ''आ सकती हो!''

कातारीना पगडंडी से नीचे घर की ओर उतरी, जहाँ औरत एक बहुत ही मैला-कुचैला पेटबन्द पहने उसका इन्तज़ार कर रही थी, दो लड़कों के साथ, जो दाएँ-बाएँ उसकी स्कर्ट का पल्लू पकड़ कर खड़े थे। औरत की स्कर्ट छेदों से भरी हुई थी और नंगे पैरों पर उसने सैंडल पहने हुए थे, जिन्हें फीतों से बाँधा गया था। उसकी दृष्टि में सदयता नहीं थी जब उसने पूछा कि क्या वह 'मोएर' वाली दादी थी, जहाँ एक बच्चा होने वाला है।

कातारीना ने हामी भरी और जितनी जल्दी हो सका उगल डाला कि दादी के बगीचे में दो सफ़ेद मुर्गियाँ हैं, और बेज़ी का ख्याल है कि वे यहाँ से आई हैं।

जब बारबरा ने रूखेपन से पूछा कि यहाँ से ही क्यों तो कातारीना ने कहा कि दादी वाली सारी चित्तीदार हैं। उसे हैरानी होगी, बारबरा ने कहा, अगर उसकी दो मुर्गियाँ भाग गईं, उसने तो दड़बे को खोला तक नहीं था।

'ज़ेप्प!'' उसने घर में आवाज़ लगाई, लेकिन जब कोई नहीं निकला तो उसने आलसी कुत्ते जैसा कोई फ़िकरा मुँह से निकाला, कातारीना को अपने साथ आने को कहा, और पैर घसीट कर घर का चक्कर लगाने लगी, दोनों लड़के उसके पीछे चल रहे थे, उसकी टाँगे घुटनों तक गन्दी थीं।

जब कातारीना ने मुर्गियों के टूटे-फूटे दड़बे को देखा, जो उसके कद से ज़्यादा ऊँचा नहीं था, तो उसका ध्यान तुरन्त जाली में फूहड़पन से पैबन्द लगाए गए दो छेदों की ओर गया। उनमें से कोई भी मुर्गी बाहर निकल सकती थी, चाहे उसे जितना भी ढंग से बन्द किया जाए।

''तुझे गिनना आता है?'' बारबरा ने सहसा पूछा।

कातारीना ने हामी में सिर हिलाया और मुर्गियाँ गिनने लगी, जो उसे देखकर गट-गट करते हुए एकत्र हो गई थीं। ''छः'' उसने कहा।

बारबरा भी साथ-साथ गिर रही थी। ''तो सभी यहीं हैं। अन्ना को बता दे कि मुर्गियाँ यहाँ से नहीं गईं।''

अच्छा, दादी का नाम अन्ना है, कातारीना को अब याद आया।

बारबरा पैर घसीटते हुए वापस चल पड़ी, लड़के निःशब्द, मन्थर गति से साथ

चल पड़े। कातारीना पीछे चल पड़ी, उसे परनाले की झंझरियों और जन्दरों के ऊपर से निकल कर जाना पड़ा, जो नीचे पड़े हुए थे। बारबरा के पीछे चलते हुए उसे लगा कि उसे बोतल से आने वाली विलक्षण जड़ी-बूटियों की गंध आ रही है, जो बात उसे समझ नहीं आई, औरतें तो ब्रांडी पीती नहीं। छोटे वाले लड़के ने एक कमीज़ पहनी हुई थी, जो मुश्किल से उसके घुटने के ऊपर तक आती थी, पीठ पर तक़रीबन ऊपर से नीचे तक उसमें एक चीर था, जिसमें से छोटे की त्वचा नज़र आ रही थी। इसके पास बनियान नहीं है, कातारीना ने सोचा।

''स्कूल नहीं गई तू?'' बारबरा ने मुड़ कर उससे पूछा।

कातारीना विस्मित थी, ''नहीं,'' धीमे स्वर में वह बोली। यह तो नज़र ही आ रहा है कि वह यहाँ थी, स्कूल में नहीं।

वे फिर कुत्ते की झोंपड़ी के पास पहुँचे गए थे, जो अविश्वास की दृष्टि से उसे ताक रहा था और गुर्रा रहा था।

''चुप, सूअर गधे!'' बारबरा इतने गुस्से से बोली कि कातारीना भी घबरा गई। कुत्ता तुरन्त दुबक कर झोंपड़ी में घुस गया, जिसकी छत का एक टुकड़ा भी गायब था। बारबरा खड़ी हो गई, उससे पूछा, ''बच्चा आ गया क्या?''

जवाब देने से पहले कातारीना ने एक पल सोचा, ''हम नहीं जानते।'' फिर ऊपर से जोड़ा उसने, ''कल वेरेना वहाँ गई है।''

बारबरा ने आह भरी और कहा, ''एक पेट और भरने को।''

पहली बार दोनों लड़कों में से एक ने मुँह खोला और खाने के लिए कुछ माँगा, लेकिन बारबरा उन पर चिल्लाई कि अब कुछ नहीं मिलेगा, दोपहर तक उसे इन्तज़ार करना पड़ेगा। छोटे ने अस्पष्ट स्वर में रोना शुरू कर दिया, लेकिन बारबरा भावशून्य वहीं खड़ी रही, चुपचाप।

तब कातारीना बोली, ''अच्छा, आदे[1]'', और तेज़ी से पगडंडी से ऊपर चढ़ने लगी। जब वह रास्ते पर मुड़ने लगी तो पीछे से बारबरा ने तीखे स्वर में आवाज़ लगाई। ''अन्नी को बोल दे कि अगर दोनों मुर्गियों का कोई मालिक नहीं है तो मैं ले लूँगी।''

कातारीना ने मुड़कर हाथ उठाया, इशारे के रूप में कि वह समझ गई है। अब उसने देखा कि बारबरा के घर की चिमनी से धुआँ नहीं निकल रहा था। खलिहान से एक मरियल सा लड़का बाहर निकलकर कातारीना को देखने लगा, उसने बारबरा को उसे ढेर सारी गालियाँ देते सुना। यह शायद, कातारीना ने सोचा, आलसी कुत्ता ज़ेप्प है, और इस घर से जल्दी से जल्दी दूर जाने के लिए उसने अपने क़दम तेज़

1. विदा लेते समय 'आदे' कहते हैं।

कर दिए, यहाँ की हर चीज़ से उसमें जुगुप्सा भी भावना उत्पन्न हुई थी। अगर बेज़ी उसे कभी दुबारा यहाँ भेजेगी तो वह नहीं आएगी।

उसे ज़रा सी ठंड लगी और उसने अपने हाथ पेटबन्द की जेब में डाल लिए। वहाँ उसके हाथ में वे सूखे आलूचे आए, जो माँ ने उसे दिए थे। उसकी नज़रों के सामने वो भूखा बच्चा फिर आ गया। उसने इसमें से एक उसे क्यों नहीं दे दिया?

उसके दिमाग़ में जवाब मचलने लगे। अब उसे ध्यान आया कि उसके पास थोड़े से थे, नम्बर एक, और बारबरा गुस्सा खाती, नम्बर दो, और दूसरा लड़का भी एक माँगता, नम्बर तीन। सिर्फ़ एक सवाल के ये जवाब काफ़ी थे, और कातारीना तेज़ क़दमों से आगे चलती रही, दादी के घर की तरफ़, जो अब रास्ते के ऊपर नज़र आ रहा था। बूँदा-बाँदी शुरू हो गई थी। धूप फिर नहीं निकली।

बहुत बुरा होता है जब किसी का पति मर जाता है, कातारीना ने सोचा, तब सब जगह छेद ही छेद होते हैं, कपड़ों में, मुर्गियों के दड़बे में और कुत्ते की झोंपड़ी पर, परनाले की झंझरियाँ इधर-उधर पड़ी होती हैं। बच्चों के पास जुराबें और जूते नहीं होते, उन्हें दरिद्रालय से शोरबा लाना पड़ता है। बेहतर बल्कि यही होता है कि पति हो ही न, जैसे निचले याग्गली की एल्ज़बेथ का, न होगा न मरेगा। और तब परिवार में बच्चे किसी और के होते। उप्परले और निचले याग्गली के घरों में एक-एक पूरा परिवार रहता था, और पिता याग्गली-पुत्र थे, उप्परला और निचला, और उप्परले याग्गली पुत्र का एक छोकरा उसके स्कूल में जाता था, उसका नाम भी याग्गली था, पहली कक्षा में था वह, और निचले याग्गली पुत्र का एक छोकरा भी तीसरी कक्षा में था, उसका नाम भी याग्गली था, और सबके छोटे-बड़े बहन-भाई थे, और कभी-कभी वे इकटठे 'मोएर' के दालान में अन्धी गाय खेला करते थे, या फिर रामीनरबाख़ के नीचे छुपम-छुपाई और यहाँ ऊपर बारबरा के बच्चों के मुक़ाबले उनकी ज़िन्दगी में ज़्यादा मौज़-मस्ती थी।

कातारीना के क़दमों की आवाज़ सुन कर नेरो भौंकने लगा।

''अच्छा अच्छा नेरो...'' उसने उसके पास से उसे शान्त करने की कोशिश की, लेकिन वह भौंकता गया। तब कातारीना को बारबरा की बात याद आई और वह कुत्ते पर चिल्लाई, ''चुप, सूअर गधा!'' और वह हैरान हो गई देख कर कि वह तुरन्त शान्त होकर अपनी झोंपड़ी में जाकर लेट गया।

जब उसके बाद वह बाहर वाले कमरे में अपने जूते उतार रही थी तो बाज़े उससे बोली, ''तू चिलमिचयाँ भूल गई है।''

''अभी मैं उन्हें ऊपर ले जाऊँगी।'' कातारीना बोली।

''कैसे यक़ीन आए।'' बाज़े ने ज़रा तल्ख़ी से कहा।

''करूँगी।'' कातारीना ने कहा, ''मैंने पहले भी जूते पहन रखे थे।'' ये बड़े किसी का यक़ीन क्यों नहीं करते? जब वह बड़ी होगी तो तब सभी बच्चों का यक़ीन किया करेगी, जब वे कहेंगे कि चिलमचियाँ ऊपर ले जाएँगे।

''और? मुर्गियों का क्या हुआ?'' बाज़े ने पूछा।

''वे बारबरा की नहीं हैं'' कातरीना ने कहा, ''उसकी सभी वहीं हैं। मैंने खुद गिनी हैं।''

''और कितनी हैं वे?''

''छः'', कातारीना ने गर्वपूर्वक कहा।

जब चिलमचियों जैसा कोई बुद्धू काम न हो तो उस पर भरोसा किया जा सकता है। उसे अकेले अजनबी लोगों के यहाँ भेजा जा सकता है, और वह उनकी मुर्गियाँ भी गिन सकती है।

बाज़े ने सिर झटका, ''कमाल है'', वह बोली।

10

''और फिर वह उतर गए, नोआ, नाव से, सारे रिश्तेदारों के साथ, जब कबूतर नहीं लौटा, और जब उन्होंने देखा कि पैरों के नीचे ठोस जमी़न है, अराराट पर्वत पर, और प्रिय प्रभु ने एक इन्द्रधनुष भेज दिया था, संकेत के रूप में कि वह मनुष्यों से अब समझौता चाहता है।''

''और पशु?''

''वे सब नौका से उतर पर पूरी दुनिया में फैल गए।''

कातारीना नीचे वाले कमरे की मेज़ पर खिड़की की ओर पीठ किए आतिशदान के निकट पड़े सोफ़े पर लेटी अपनी दादी को सुन रही थी।

दादी दोपहर को दुबारा उठ गई थी और उसने गाजरों और दलिए के दाने का शोरबा बनाया था। दोपहर से पहले बाज़े ने झरने पर पोतड़े और चादर धो दिए थे और कातरीना के साथ मिलकर सब खलिहान में टाँग दिए थे। पिछले ''ब्लाइगन'' से घर तक जो बूँदा-बाँदी हो रही थी वह अब बारिश में बदल चुकी थी।

पाउल नाखुश सा घर लौट आया था। सुबह उसने साल की दूसरी कटाई शुरू की थी, पर बीच में ही रुकना पड़ा था, क्योंकि बारिश आ गई थी। दोपहर का खाना खाते हुए वह बोला कि मालिक को एल्म के बाशिन्दों से शायद कोई पुराना हिसाब चुकाना है, शायद वह खुश नहीं है कि उन्होंने पुरानी भजन-पुस्तक को सुनना-सुनाना बन्द कर दिया है। दादी ने इस पर उसे डाँटा, लेकिन पाउल कहने लगा कि मालिक मज़ाक को समझ सकता है, या फिर तेरा क्या ख़्याल है, दीदी? तब उसकी

बीवी ने उसे टोका कि उसे बच्ची से ऐसे सवाल नहीं पूछने चाहिए, और कातारीना को तसल्ली हुई, क्योंकि उसके पास कोई जवाब नहीं था।

खाने के बाद दादी ने चीनी के एक पिण्ड पर विदारी कन्द का सत लगा कर मुँह में डाला, और दोनों बच्चों ने भी सर्पित फूलों से अलंकृत टीन की डिबिया से एक-एक लिया। उसके बाद कास्पार को दोपहर बाद की नींद लेने जाना था। वह काठ की गुड़िया लीज़ी को भी साथ ले जाना चाहता था, लेकिन कातरीना ने उसे ले जाने से रोक दिया, और गुड़िया को कमरे के आतिशदान के पीछे वाली बेंच पर बिठा दिया। दादी आराम करने के लिए सोफ़े पर लेट गई। पता नहीं उसे क्या हो रहा है, उसने कहा, बस कुछ ठीक नहीं लग रहा, लेकिन जल्दी ही ठीक हो जाएगा। फिर कातारीना ने पूछा कि प्रलय का अन्त कैसे हुआ था, और दादी ने उसे पूरी कहानी फिर से सुनाई।

दादी जब कहानी सुनाती थी तो कातारीना को सुनना अच्छा लगता था। उसके माता-पिता के पास इसके लिए समय नहीं होता था। जब वह कोई सवाल करती थी तो ज़्यादातर वे कम से कम शब्दों में उसका जवाब देने की कोशिश करते थे, क्योंकि तभी उन्हें कुछ और भी करना होता था। पानिक्स दर्रे से जनरल सुवोरोव[1] के निकलने की कहानी उसने दादी से सुनी थी। उसने बताया था कि तब हज़ारों फटेहाल और दुबले फ़ौजी घाटी से यहाँ गाँव में आए थे, और माइसनबोडेन में उन्होंने राइनर की पाँचों गाएँ, तबेले से निकाल कर उन्हें वहीं दालान में ही काट दिया था और तुरन्त कच्चे गोश्त पर टूट पड़े थे, क्योंकि वे उनके पकने तक इन्तज़ार करने की हालत में नहीं थे, और कड़कती ठंड में जानवरों की अन्तड़ियों से भाप निकल रही थी, और इस वीभत्स भोज के बाद फ़ौजियों के चेहरे ख़ून से लाल हो रहे थे, और कुछ और फ़ौजियों ने बाद में बकरियों की खाल को ग़रम पानी में उबलने के लिए डाल दिया था, क्योंकि उन्हें उम्मीद थी कि उनका शोरबा बन जाएगा, और उन्होंने लोगों के बदन से कपड़े और पैरों से जूते उतार लिए थे, और रूसियों का पीछा कर रहे फ्रांसीसी लगातार उन पर गोलाबारी कर रहे थे, और जनरल सुवोरोव ने रात ज़िलाध्यक्ष के यहाँ बिताई थी और दादी के पिता को, जो उस समय नौजवान होते थे, अगले दिन तड़के जाना पड़ा था लालटेन लेकर, ताकि रूसी को पानिक्स दर्रे का रास्ता दिखा सकें, और पूरा समय बरसात पड़ती रहती थी, और पूरी पिछली घाटी में बादल, हवा और कोहरा इतने थे कि अपने सामने चल रहा आदमी नज़र नहीं आ रहा था और येत्स्लोख़ में इतनी बर्फ़ पड़ी थी कि अन्धे माइनराड के पिता बेबलर योहान्न को भी, जो हर गर्मियाँ ओबर-श्टाफ़ल में गाय

1. जनरल सुवोरोव : रूसी जनरल, जिसने 1799 में फ्रांसीसियों को उत्तरी इटली में खदेड़ा था।

चराता था, राह ढूँढ़ने में मुश्किल पेश आई थी, और दर्रे की ऊँचाई पर पहुँचते-पहुँचते सर्दी बढ़ती जा रही थी, और फ़ौजी, जिन्होंने पैरों में चीथड़े पहन रखे थे, दर्ज़नों में फिसल रहे थे, और खच्चरों और उन पर लदी तोपों समेत खाई में गिर गए थे, और फिसल कर गिरने, मरने से पहले हताशा में हिनहिना रहे थे, और भारी तोपें धड़धड़ाती हुई गिरी थीं, और ढालों से नीचे उनके धड़ाम से गिरने की आवाज़ आई थी, हिमस्खलन और बर्फीले तूफ़ानों ने मनुष्यों के जत्थे के जत्थे अपने नीचे गाड़ दिए थे, और बहुत से फ़ौजी यूँ ही गिर गए थे और फिर थकान के मारे खड़े नहीं हो सके थे, और दर्रे की ऊँचाई पर रात पड़ गई थी, और वक्र खंग लिए लम्बी काली दाढ़ियों वाले फ़ौजियों ने अपने भाले जला दिए थे, ताकि जनरल खुद को गर्मा सके, जनरल ने धूसर रंग का कोट और हैट पहन रखा था, और पिता ने और बूढ़े बेबलर ने अपनी-अपनी लालटेन बुझा दी थी, और रात के अन्धेरे में वहाँ से निकल गए थे, नीचे घाटी में, ठिठुरते योद्धाओं के बीच से निकलते हुए, और अन्धा माइनराट अभी भी वह मोटी टोपी पहनता है, जो उसके पिता ने पानिक्स पर पहनी हुई थी, और कौन जाने कि अगर उस दिन उसके पिता वापस न आते तो शायद ऊपर वहीं कहीं बर्फ़ में जान गंवा बैठते, और आज इस दुनिया में न होते, और अगर वह दुनिया में न होते तो उसका शागली भी दुनिया में न होता, और तब वह, कातारीना भी दुनिया में न होती।

इस विचार से कातारीना सिहर उठी थी, और अब जब उसने इसे फिर से सोचा तो फिर सिहर गई। मतलब अगर दादी के पिता नहीं लौटते तो वह इस दुनिया में न होती।

''सुन दादी'', कातारीना ने अनायास पूछा, ''क्या सही है कि तुम्हारे पिता डरपोक खरगोश नहीं थे?''

दादी भौचक्की रह गई। ''यह ख्याल तुझे कैसे आया?''

''क्योंकि वह जनरल सुवोरोव के साथ दर्रा पार करने की बजाय लौट आए थे।''

''नहीं।'' दादी बोली, ''उसके पिता एक हिम्मतवर आदमी थे, लेकिन वे रूसियों के लिए अपनी जान दांव पर क्यों लगाते? उन्होंने तो पूरे गाँव को लूटा था, और ख़तरा तो वैसे भी था, क्योंकि भागने वाले को रूसी वैसे भी गोली मार सकते थे।''

''और नोआ?'' कातारीना ने पूछा, ''क्या नोआ डरपोक खरगोश नहीं था?''

दादी की हैरानी कम नहीं हो रही थी। ''अब यह क्यों सोच रही है तू?''

और लोगों, ने, कातारीना ने कहा, उसका मज़ाक उड़ाया होगा, उसकी नौका

करके, सूखी ज़मीन पर नौका।

''हाँ'', दादी ने कहा, क्योंकि अभी-अभी उसने अपनी पोती को कहानी ऐसे ही सुनाई थी।

''लेकिन नोआ जानता था कि उन्हें यह नौका बनानी ही होगी, क्योंकि ईश्वर ने स्वयं उसे कहा था।''

तो दूर-दूर तक कोई डरपोक गीदड़ नहीं, न नोआ न दादी के पिता। दोनों की जानकारी और लोगों से ज़्यादा थी, एक जानता था कि ख़तरा बढ़ेगा, और दूसरे को ईश्वर ने बताया था कि मनुष्यों पर कोई विपदा आने वाली है। वैसे सबसे बढ़िया यही था कि किसी को ईश्वर सीधा ही बताए, अपने परलोक के सिंहासन से।

''दादी'' कातारीना बोली, ''क्या ईश्वर स्वयं धरती पर आया था, नहीं तो उसने नोआ को कैसे बताया था?''

दादी ने उसाँस भरी। ''मेरा ख्याल है'', उसने कहा, ''नोआ इतनी श्रद्धा से ईश्वर को तब तक प्रार्थना करता रहा था जब तक वह उसे नज़र नहीं आ गया, और तब वह उसे बता सकता था।''

अब कातारीना ने उसाँस भरी। शायद उसे कल श्रद्धापूर्वक तब तक प्रार्थना करनी चाहिए थी, तब तक ईश्वर उसे नज़र नहीं आ जाता, तब वह उसे कह सकती थी, या वह उसे कह सकता था कि माँ और नए बच्चे का सब ठीक से होगा, या कि वह अपने पुत्र को यहाँ भेज रहा है।

''दादी'' कातारीना बोली, लेकिन जब उसने सोफ़े से गहरी और नियमित साँसों की आवाज़ सुनी तो वह समझ गई कि दादी को नींद आ गई है। वह दादी से पूछना चाहती थी कि क्या 'मोएर' में बच्चा जन्म ले चुका है, लेकिन उसे कहाँ से मालूम होगा, जब किसी ने आकर उसे बताया नहीं। या उसे खुद ही भाग कर नीचे वाली घाटी में जाकर पता करना चाहिए? ज्यों ही दादी उठेगी, वह पूछेगी उससे। कातारीना घूमकर खिड़की से बाहर देखने लगी। उसकी नज़र प्लाट्टेनबेर्ग पर जा रही थी, जिस पर गहरे बादल छाए हुए थे। हवा का एक झोंका बारिश की एक झड़ी खिड़की के शीशों पर ले आया। ऊपर से उसने शिशु के रोने की आवाज़ सुनी, और बाद में बाज़े की उसे शान्त करती आवाज़, जब तक कि वह चुप नहीं हो गया। पाउल घर में नहीं था, वह फिर से ऊपर माट्ट गया था, खलिहान में एक सूराख़ की मरम्मत करने। फ्रीडोलिन योहान्नेस के साथ गाँव में बढ़ई के यहाँ था। दोनों ने वादा किया था कि काम ख़त्म करने के बाद वे ''मोएर'' जाएँगे, ताकि ख़बर ले आएँ। कास्पार की कोई आवाज़ नहीं आ रही थी, लगता था सो गया है।

पंजों के बल चलती हुई कातारीना गुड़िया घर की ओर गई, जो दादी के सोने के कमरे के साथ दरवाज़े के नीचे था। यह वो गुड़ियाघर था, जिसमें उसके पिता और उसके सब भाई-बहन खेले थे, और दादी ने अब ख़ास तौर से उसके लिए और कास्पार के लिए रखा था।

अगर छत उठाओ तो कमरे में एक बैठक थी, दो सोने के कमरे, एक रसोई और एक स्टोर-रूम, जिसमें रैकों पर दो थैले पड़े थे, दीवारों पर छोटे-मोटे कपड़े से टँगे थे, एक सुअर के पुट्ठे का सुखाया माँस था, और फिर एक-दूसरे के ऊपर बाँध कर रखे गए लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े, ये लंगोचे थे। उसमें रहने वाले थे जानवरों की छोटी-छोटी पीली हड्डियाँ, जिन्हें छोटे-छोटे कपड़े पहनाए गए थे, ये मनुष्य थे। झूला लकड़ी से काटकर बनाया गया था, और उसे सचमुच झुलाया भी जा सकता था। कातारीना ने तर्जनी से उसे ज़रा सा हिलाया और धीमे स्वर में गाने लगी :

''बच्चा मेरा, सो जा,
तारे चमकें प्यारे-प्यारे।।'

लेकिन हड्डियाँ सन्तुष्ट नहीं थीं, और वे अपने ऊनी कम्बल के नीचे लगभग अश्रव्य घरघरा रही थीं। बस एक ही तरीका था, माँ चाहिए थी उसे। वह एक छोटी-सी फ्रांइग-पैन लेकर रसोई की मेज पर बैठ गई, जिसमें वह तालीशपत्र डालकर लोबिये का सूप तैयार करने लगी। फिर कातारीना उसे शिशु के पास लेकर आई, और उसकी नीली चोली खोल दी उसने, जिस पर सिर्फ़ एक ही हुक लगा हुआ था। फिर उसने शिशु का सिर वहाँ दबाया, जहाँ माँ का वक्ष होना चाहिए, और एक पतली चप-चप की ध्वनि हुई।

कातारीना को औरतों की उन छातियों की याद आई, जो उसने कल देखी थीं। वह कल्पना नहीं कर सकती थी कि कभी उसकी भी इस तरह की कोई चीज़ उग आएगी और कि वह उसमें एक बेबी के लिए दूध एकत्र करेगी। मगर इससे बचा नहीं जा सकता था, क्योंकि उसकी बहन रेगूला की छातियाँ साफ़-साफ़ गोल फूलनी शुरू हो गई थीं, और अन्ना की छातियाँ कम से कम उसकी माँ जितनी तो थीं। तो यही देर-सवेर कातारीना के साथ भी होने वाला था।

बाहर से कुछ आवाज़ होने पर उसने माँ और बच्चे को वहीं गिरा दिया और खिड़की की ओर दौड़ी। वह आँखों से पूरे प्लाट्टेनबेर्ग का मुआइना कर रही थी, लेकिन ऐसा कुछ नज़र नहीं आ रहा था कि जिससे लगे कि कुछ टूट कर गिरा है। चट्टानें गिरने में यही गुस्से वाली बात थी। जब शोर होता था तो पत्थर पहले ही नीचे पहुँच चुके होते थे, उस समय किसी को कुछ नज़र नहीं आता था जब कुछ

होता था।

फिर भी कातारीना को लगा कि जहाँ वह देख रही है वहाँ कुछ मटमैला धुआँ सा उठ रहा है। शायद उसमें से दो-चार बड़ी खाई में जा गिरे थे? क्या उसी फटन में जो इतनी गहरी थी कि चारे के लिए घास काटने वाले उन पत्थरों की आवाज़ नहीं सुन सकते थे, जिन्हें वे नीचे फेंकते थे?

''क्या था यह, बच्ची?'' दादी ने पूछा।

''पहाड़ एक दो देवदारू के पेड़ खा गया है।'' कातारीना ने कहा।

ऊपर शयन-कक्ष में कास्पार ने रोना शुरू कर दिया।

ग्युंटर ग्रास का जीवन-चरित्र

बीतते समय के विरुद्ध लेखन

फोल्क़र नोएहाउस **अनुवाद : अमृत मेहता**

'टिन ड्रम' की सफलता

जब 1959 की पतझड़ में अन्ततः 'टिन ड्रम' का प्रकाशन हुआ तो प्रेस तथा जनता की प्रतिक्रिया को। हंस माग्नुस एँत्संसबेर्गर के इस भविष्य-सूचक वक्तव्य ये बेहतर शब्दो में व्यक्त नहीं किया जा सकता, अब जबकि उनकी दक्षिण जर्मन रेडियो में दी गई वार्ता स्मरणीय बन चुकी है, ''यदि अभी भी जर्मनी में कोई आलोचक बचे हैं तो ग्युंटर ग्रास नाम के आदमी का पहला उपन्यास हर्ष तथा क्षोभ के स्वरों को जन्म देगा... वह हमारे आकांक्षाहीन साहित्यकारों का—अब चाहे उनकी प्रवृत्तियाँ उन्नीसवीं शताब्दी की पुराणपंथी या चाटुकारितापूर्ण हों—दिमाग़ ठिकाने लगा देगा। यह एक रंग में भंग वाला आदमी है, हरिमीन के पोखर में एक शार्क है। हमारे स्थानिक साहित्य में एक जंगली, झुंड से अलग रहने वाला पशु है, और उसकी पुस्तक ड्योब्लिन की 'बर्लिन अलेग्जांदरप्लात्स' तथा ब्रेष्ट की 'बाल' की तरह एक दैत्य है, जिस पर समीक्षकों तथा भाषाशास्त्र के विद्वानों को एक दशक तक कमरतोड़ मेहनत करनी पड़ेगी, जब तक कि वह साहित्य के इतिहास के शवकक्ष में अन्तिम दर्शनों के लिए सन्तों की सूची में शामिल नहीं हो जाती।''

विशेषकर क्षोभ के स्वर—कभी-कभी अत्यन्त तीखे—बहुत उठे, और आज पीछे मुड़कर देखें तो वे कभी-कभी अत्यधिक अतिश्योक्ति पूर्ण, बल्कि स्वाँगपूर्ण लगते हैं। 1960 के आरम्भ में ब्रेमन के प्रतिष्ठत साहित्य पुरस्कार की जूरी के निर्णय को ब्रेमन की सेनेट की सहमति नहीं मिली और औपचारिक रूप से पुरस्कार के नए विजेता ग्रास का नाम खारिज कर दिया जाता है। नाज़ियों का भूतपूर्व प्रचारक कुर्ट त्सीज़ल 1968 में जर्मनी के सर्वोच्च प्रान्तीय न्यायालय में ग्रास को साहित्यिक सन्दर्भ में 'अश्लील बकवास का घटिया लेखक' कहने के अपने अधिकर का मुकदमा लड़ रहा होता है। क्रोध की इस आँधी का सर्वश्रेष्ठ स्पष्टीकरण हाइनरिष फ़ोर्नवेग ने दिया था, ''अश्लीलता, ईश्वर-निन्दा, नाशवाद? ये नाज़ी युग के

अन्धकारमय समय और उसके बाद लम्बे समय तक चलने वाले कष्टदायी उत्तरपरिणामों के यथार्थ के पचास के दशक के उपयुक्त शब्द थे।''

पुस्तक की मन:सृष्टि में इस यथार्थ को कलात्मकता के माध्यम से पिरोया गया था, अपने कलात्मक विकास की उच्चतम तथा अन्तिम सीढ़ी के तौर पर ओस्कार ''वापस ढोल बजाने'' की कला सीखता है, ढोल के माध्यम से अतीत को सजीव करना। अतीत की सहायता से ही वह प्रायोजित 'उपन्यास' लिख सकता है : पहले वह उसका ढोल बजाता है, फिर उसे लिखता है। ढोल की छड़ी के श्रुतलेख पर चलते हुए जब ओस्कार एक-एक करके 'मासूम काग़ज़ के पाँच सौ पृष्ठ' अपने फाउंटेनपेन की स्याही से भर देता है—वह 'उपन्यास' में एक यथार्थ उत्पन्न करता है, जिसमें से निकलकर वह जीवन में लौट आता है।

चूँकि उसके ढोल को 'ढंग से और धैर्य से बजाने पर वो सब सूझता है, जो बेकार की बातों के लिए ज़रूरी है, ताकि असली बात को काग़ज़ पर उतारा जा सके', अत: दसकी जीवनकथा के साथ-साथ यथार्थ से ऊब चुका एक युग-दर्पण भी बनता है : कलात्मक उपन्यास अपने समय का दर्पण भी बन जाता हे, जैसे कभी टोमास मन ने अपने 'डॉ. फाउस्टुस' के लिए योजना बनाई थी : ''इस एक बार मैं जानता था कि मैं क्या चाहता हूँ और मुझे क्या करना है : मेरे समय के उपन्यास से कम कुछ नहीं, एक कलाकार के अतिकष्टकर और पापमय जीवन की कथा के आवरण से लिपटा एक उपन्यास।''

'फ्रॉम दी डायरी ऑव ए स्नेल' के केन्द्र में ग्रास लिखते हैं, ''समय, गुज़रता समय अपराधियों के हित में गुज़रता है, इसके जो शिकार होते हैं उनका समय गुज़रता ही नहीं।'' ''एक लेखक, बच्चो, वह है जो गुज़रते समय के विरुद्ध लिखता है।'' बिल्कुल इसी अर्थ में ओस्कार अपनी कला को देखता है, जिसको वह 'टिन ड्रम' में ''वापस ढोल बजाने की कला'' में विकसित करता है और इस तरह ''गुज़रते समय के विरुद्ध'' पहले ढोल बजाता है और फिर लिखता है। इसे वह जानबूझकर और एक विशेष इरादे से करता है, जो उसके मनन और शैली में भी परिलक्षित होता है। ''तभी मंगोल आँखों वालों तथा गोल आँखों वालों के बटन खो गए। लेकिन तब स्टाकहोम में एक दर्जी बैठा था, जो उसी समय शाम को पहनने वाले एक बढ़िया धारीदार सूट पर बटन सी रहा था...तो यह भी मुमकिन था कि घटनाचक्र का धागा, जो आगे से भी भूखा था, फंदे निगल रहा था और इतिहास बना रहा था, पीछे इतिहास बनकर गुँथ रहा था। और अनायास मुझे विचार आया कि बेकार बैठना, माथे पर बल डालना, सिर लटका लेना, हाथ मिलाना, बच्चे पैदा करना, जाली नोट छापना, बत्ती बुझाना, दाँत साफ़ करना, गोली मारकर हत्या कर

देना और कपड़े सुखाना जैसे कार्य हर जगह किए जा रहे होते हैं, चाहे एक जैसी चतुराई से न सही। मुझे इस तरह के बहुत से लक्ष्यनिष्ठ कार्यों से सम्भ्रान्ति होती थी।'' ओस्कार को भ्रमित करने वाले 'लक्ष्यनिष्ठ कार्य से ही', ''केवल घटनाक्रम के सूत्र'' से, केवल 'इतिहास' ही नहीं बनता, बल्कि 'इतिहास बुना भी जाता है।'

'टिन ड्रम' में 'इतिहास' की धारणा ओस्कार हमेशा एक ही अर्थ मे 'जीवित' और 'समायिक' के विलोम के रूप में प्रयोग करता है। दर्शक- मंच वाले किस्से में, ''आज जो सब इतिहास बन चुका'' है और वह ''अभी से ठंडे लोहे में ढलने'' को उत्सुक है। यह 'इतिहास बनना' बड़ी तेजी से घटता है, क्योंकि आत्मा को हल्का करने का यह सब से आसान तरीका है, जो ओस्कार स्वयं बाडेन में ब्रोंस्की की कब्र के सामने से गुज़रते हुए अनुभव करता है। ''पोलिश चौकी की रक्षा अब तक इतिहास बन चुकी थी, रक्षा करने वालों की हड्डियों से माँस गिरने से पहले ही''—समय अपराधियों के हित में गुज़रता है, कब्रों में पड़े उनके शिकारों का समय गुज़रता ही नहीं।''

अपने दोष को मद्देनज़र रखते हुए ओस्कार को जो अनुभव यहाँ होते हैं। वे युद्ध के बाद सामूहिक प्रक्रम के रूप में सम्पन्न होते हैं, ''ओस्कार ने सामूहिक पाप के बारे में 'कैथेलिकों' और प्रोटेस्टेंटों से बात की, उन सबके साथ स्वयं को दोषी अनुभव किया, जो कहते थे : अब हम अगर तय कर लें तो यह सब पीछे छूट चुका होगा, और हालात बेहतर होने शुरू होंगे तो हमें अपने भीतर पाप-बोध पालने की आवश्यकता नहीं रहेगी।''... आज, जब वह 'टिन ड्रम' लिख रहा है तो यह सब कुछ पीछे छूट चुका है और वह जानता है कि इस युद्धोत्तर नशे का सिरदर्द और थकान ही बाकी बचे हैं, जो 'म्याऊँ-म्याऊँ' करते हुए अभी से हर उस चीज़ के इतिहास बन जाने की घोषणा कर रहे हैं जो अभी कल तक कर्म या कुकर्म के रूप में हमारे हाथों से ताज़ा और ख़ून से सनी निकली थी। इतिहास बनने की इस 'हल्की थकान' के विरुद्ध, कर्मों और कुकर्मों को ताज़ा और रक्त रंजित बनाए रखने के लिए वह अपनी पुस्तक लिखता है।'' मुड़कर टिन ड्रम पर दृष्टि डालते हुए ग्रास कहते हैं, ''शायद लेखक को खोदकर कुछ नई जानकारियाँ निकालने में, पाखंडपूर्ण बरताव को नंगा करने में, नाज़ीवाद के पिशाचीकरण के झूठे भयपूर्ण विक्षोभ की जड़ खोदने में और तब तक भय से गले में फँसे शब्दों को बाहर निकालने में सफलता मिली है, अतीत पर वह विजय नहीं पा सकता था और पाना नहीं चाहता था।''—क्योंकि ग्रास भी अतीत को कर्मकांड के जरिए भगा के अहानिकर नहीं बनना चाहते थे। यदि किसी ने अतीत से कुछ सीखना है तो उसे सतर्क, स्पष्ट और स्मृतिस्थ रहना होगा।

ग्रास अपने विकास को ओस्कार में प्रतिबिम्बित करते हैं। 'राइष्सक्रिस्टालनाख्ट'

में जब उसके खिलौने बेचने वाले दुकानदार की मौत होती है तो ओस्कार अभी भी नहीं समझना चाहता कि जर्मनी और दांत्सिष में खुलेआम जिस आतंक को सहन किया जाता रहा था, उसके साथ 'वह अपेक्षाकृत खुशियों भर खेलने-कूदने का जमाना समाप्त हो चुका था, ''और वह दुकान से तीन ढोल चुरा लाता है'' लेकिन 'उपन्यास' लिखते समय यह जानता है—''एक बार एक खिलौने वाला होता था, उसका नाम मार्कुस था और वह अपने साथ इस दुनिया के खिलौने भी ले गया था''—कला कला के लिए, इसी बीच ओस्कार और उसके लेखक ने कला को सिर्फ़ एक मनोरंजक खेल के रूप में लेना बन्द कर दिया है। और ग्रास आगे भी 'गुज़रते समय के विरुद्ध' लिखते हुए थके नहीं—हाल ही में 1995 में प्रकाशित उपन्यास 'ए वाइड फील्ड' बिना आन्तरिक मेल के एक बाह्य एकीकरण के इतिहास बन जाने के विरुद्ध है।

'दांत्सिष ग्रन्थ त्रय' का निष्पादन

1960 के आरम्भ में ग्रास लेखकों और साहित्य-प्रेमियों में तब बहुत लोकप्रिय श्टाइनप्लाप्स में ठहरते हैं और वहाँ रहते हुए मकान ढूँढ़ते हैं। उन्हें बर्लिन के शमार्गनडोर्फ़ इलाके की कार्लबाडर श्त्रासे, 16 नम्बर पर एक 'अर्ध-खंडहर' मिलता है, जिसमें साढ़े चार कमरे और ग्रास के लेखन तथा चित्र बनाने के लिए एक स्टूडियो 'छत तले' अलग से है। मूर्तिकला से वह दो दशकों के लिए अवकाश ले लेते हैं, महाकाव्यों की तरह वह भी पूरे-पूरे दिनों का काम होता है, दोनों की एक दूसरे से नहीं बनती और ग्रास पुन: बर्लिन में ''गद्य-काव्य लिखने के लिए चूतड़ जमाकर बैठ गए हैं।''

उन्हें स्वयं ही देखकर आश्चर्य हो रहा था कि उनके पास जमा सामग्री 'टिन ड्रम' लिखने में नहीं चुक गई थी, बल्कि एक नई भारी-भरकम परियोजना की माँग कर रही थी। 'टिन ड्रम' के प्रूफ पढ़ते समय ही उनकी योजनाएँ, जो 3 जून 1959 को लेंत्सबुर्ग में और 15 सितम्बर, 1959 को पेरिस में 'कार्यशाला की रिपोर्ट' 'चार मौसम' में प्रस्तुत की गई थीं, भिन्न-भिन्न शीर्षकों जैसे 'मैं हिटलर का अल्सेशिन कुत्ता या प्लूटो का चेला या पीसू था', 'पीसू', 'आलू छीलना' लिखी गई थीं। 'पीसू' का, जिसका बाद में नाम वाल्टर माट्र्न रखा गया था, मूल भाव 'टिन ड्रम' में ही प्रकट हुआ था, जब 'प्याजों की कोठरी' में वह टकला अभिनेता 'अतिथि होता है', जिसे हमारे यहाँ पीसू कहा करते थे, क्योंकि वह सोते समय दाँत पीसता था। लेंत्सबुर्ग की योजना से स्पष्ट होता है कि इसमें माटर्न और प्रिंस प्लूटों के कथानक को बिजूखों के साथ जोड़ने का विचार बनाया गया था, जिस बारे में ग्रास

काफ़ी समय से तैयारी कर रहे थे। इस मूलभाव को वह कुछ समय से अपने रेखाचित्रों और बैलेटों की रूपरेखा में उतार रहे थे।

वास्तविक पांडुलिपि पर काम शुरू करने से पहले वह कविता-संग्रह 'पटरी का त्रिभुज' लिख लेते हैं, जो 'टिन ड्रम' की सफलता के पश्चात् 1960 में सुन्दर साज-सज्जा और ग्रास के द्वारा मोटे काले चाक से बनाए रेखाचित्रों के साथ प्रकाशित होता है। इसकी योजना पेरिस में ही बना ली गई थी, और मूलत: इसका शीर्षक ग्रास की केन्द्रीय कविता 'अंडे में' होना था। इसके विपरीत नया शीर्षक बर्लिन-सन्दर्भ को महत्त्व देता है, साथ ही पेरिस की सामग्री अब बर्लिन में लिखी गई कविताओं के साथ शमिल कर दी जाती है।

1960 की ग्रीष्म में कभी नई महाकाव्य-सदृश रचना पर गम्भीरता से काम शुरू हो जाता है, वर्षान्त तक तीन सौ पृष्ठ लिखे जाते हैं, और पूरे साल का लेखा-जोखा करते हुए ग्रास को स्वीकार करना पड़ता है कि इस रूप में उनकी रचना व्यर्थ हो जाएगी। 27 दिसम्बर, 1960 को वह ह्योलरर को एक आलेख भेजते हैं, जिसका शीर्षक है, 'अवसर विशेष के लिए रचित कविता अथवा पायलटों से बात करना—पिकासो से क्षमा माँगते हुए, अभी भी मना है,'' जिसे उन्होंने 17 नवम्बर को बर्लिन के एक कवि सम्मेलन में पढ़ा था। साथ भेजे गए पत्र में वह लिखते हैं, 'मेरी ज्ञान की देवी के साथ हुए विवादास्पद संवाद के बाद यह सिद्ध हुआ है कि मैंने कुछ सौ पृष्ठ फिजूल में लिख मारे हैं, एक बार फिर शुरू से लिखना पड़ेगा...'' चालू भाषा से अनुमान हो जाता है कि ग्रास समस्या में से भारी-भरकम और उबाऊ भाग को निकाल देते हैं और उसमें से 'कैट एडं माउस'—एक उपन्यासिका—का निर्माण करते हैं।

'चार दशक' में प्रकाशित उनके काम के लेखे-जोखे की बही से दो प्रविष्टियों से पता चलता है कि उन दिनों वह काफी परिश्रम कर रहे थे। 9 मई, 1961 के अन्तर्गत वह लिखते हैं, ''कैट एंड माउस'' लुख्टरहांट प्रकाशन को भेजी गई। उसके बाद उपन्यास की नई विस्तृत योजना है—सिर्फ़ पाँच महीनों में ही ग्रास ने घनीभूत और जटिल उपन्यासिका को पूरा कर लिया है, तुरन्त फिर से उपन्यास लिखना भी शुरू कर दिया है और पांडुलिपि में संचित सामग्री के आधार पर एक योजना भी बना ली है, जो अब गत वर्ष की लेंत्सबुर्ग में बनाई गई[1] योजना के कथानक में अनुपस्थित तत्त्वों तक सीमित है। अन्तिम शब्द योजना में परिवेश पोटाश लवण की खान है, और इस उपन्यासिका में ग्रास एक नया माहौल लेकर आते हैं।

---

1. बाद के 'डाग ईयर्स' की

पहले अगर सफलता की ओर अग्रसर मसीहा माल्के के एक शिष्य, उसके योहान्नेस और यूडास को वृत्तान्तकार बनाया गया था तो अब कथावाचक आमज़ल और हैरी हैं, हालाँकि वे अन्तिम शब्द रचना से भिन्न रूप में हैं।

12 मई, 1961 के अन्तर्गत ग्रास ने टिप्पणी लिखी है :

''बर्लिन में पितृ-दिवस। चार समलैंगिक स्त्रियाँ मर्दों की पोशाक में यह दिवस मना रही हैं और फ़ौजी तराने गा रही हैं, फुटबाल पर गप-शप कर रही है, कथा 15 पृष्ठ। जिल्द के लिए नया नमूना 'बिल्ली और चूहा'। पहली बार निश्चितता का एहसास, खान के इर्द-गिर्द केन्द्रित नए उपन्यास की एक सही औपचारिक बनावट है। दो सालों में पूरा हो जाना चाहिए।

आज हेन्न से 'कैट एंड माउस' पर आधारित फ़िल्म-परियोजना पर विचार-विमर्श करना है।

जिस उपन्यासिका पर मैंने छः महीने प्रतिदिन कड़ा परिश्रम किया है, आज वह तीन दिन से घर से निकल चुकी है, मुझसे दूर हो गई है, शायद इसलिए कि उपन्यास लौट आया है और मुझसे अपेक्षाएँ रखता है।''

एक ही दिन में ग्रास 'कैट एंड माउस' के लिए आवरण तैयार करते हैं और अपने नए उपन्यास की पूरी योजना पर परिश्रम करते हैं और फ़िल्म-निर्देशक वाल्टर हेन्न से निर्माता हंसयुर्ग पोलांट द्वारा उनके द्वारा तभी समाप्त किए गए उपन्यास पर प्रायोजित फ़िल्म पर विचार विमर्श भी करते हैं। उसी दिन वह एक ख्याल को अपनी नोटबुक में लिखते हैं, जो पन्द्रह वर्ष बाद 'फ्लाउंडर' के आठवें माह का आधार बनेगा। वाल्टर हेन्न, जो 1961 में बर्लिन में 'बुरे रसोइये' के सर्वप्रथम प्रदर्शन में निर्देशक थे, 1963 में अचानक गुज़र जाते हैं और ग्रास तभी समाप्त हुए उपन्यास 'डॉग ईयर्स' को अपने मित्र की स्मृति को अर्पित करते हैं और उनके लिए एक कविता लिखते हैं, जिसका शीर्षक है, ''मेरा मित्र वाल्टर हेन्न नहीं रहा।''

सोना नहीं चाहता था वह कभी
उसकी थकान बैठी रहती थी और बातों में समय निकाल देती थी
वह जानता था,
    स्थूल शब्दों को—
    छरहरा बनाकर जाने देना—
सम्मिति का अस्तित्व नहीं था उसके लिए;
मज़ाक में उड़ा देता था उसे।
उसका कौशल बेकार कर देता था खंभों को

दबे पाँव
उभर आती थी
उसकी वाग्विदग्धता।
तकनीक चेरी होती थी उसकी अक्सर।
हर चमत्कार के लिए नई झूलती मशीनों का आविष्कार कर लेता था।
हम बिजूखों पर चर्चा कर रहे थे,
उन्हें चलाना चाहिए।
बायेरोयथ[1] से अधिक वजन था उसका और
एक पाउंड ओलची से कम।
और सोना नहीं चाहता था।
ज़्यादा समय तक कुछ नहीं रहा उसके पास।
वह मिनटों और पैसे
के लिए
खिलाफ
और साथ खेलता था।
पानी भी आसक्त हो पीता था।
आइज़बाइन[2]
जो शौक से खाता था
पाँच चौथाई छोड़ देता था।
डेंटिस्ट से डरता था।
अपनी समस्याओं से बच के निकल जाता था,
दाएँ–बाएँ खड़े सदाहरित वीथिवृक्ष।
और मोटी औरतों को यकीन दिलाता था,
ये छरहरी छोकरियाँ हैं।
और अपने इकत्तीस साल पुराने बालों को मरोड़ता था।
और सोना नहीं चाहता था,
क्योंकि वह बोलते रहना चाहता था,
क्योंकि वह अभी भी प्यासा था,
क्योंकि उसका थिएटर हमेशा चलता रहता था,

---

1. बायेरोपथ : संगीत समारोहों के लिए प्रसिद्ध बावेरियाई नगर
2. आइजबाइन : सूअर की उंगलियों की मसालेदार गाँठ

क्योंकि हर प्रस्थान के लिए उसे तीन प्रवेश सूझते थे
क्योंकि उसे अन्त न कभी सूझा न उसने खोजा,
चतुर बहाने
        कनकौए,
रंगमंच का परदा इधर से उधर...
परन्तु मेरा मित्र
जो कभी सोना नहीं चाहता था
        मर चुका है।
नहीं। मत कहो समयपूर्व समाप्त।
उन देवताओं की बात मत करो,
प्रेम करते थे जो उससे,
जो कहा जा रहा है,
बात करो छल की, मूर्ख
और बहुभुजी अन्याय की
        रात में सब बन्द करने के समय की
        जो कहता है, बस करो, सज्जनो!
हमारी जोंकों की बात करो
उस अभाव की, जो रह गया है,
भरेगा नहीं—निश्चल देखना है उसमें—विनिद्र।

1963 में 'डॉग ईयर्स' के प्रकाशित होने पर विश्वभर में ग्रास की साहित्यिक ख्याति पर मुहर लग जाती है। 'टिन ड्रम' की ज़बरदस्त कामयाबी अभी तक का एकमात्र कमाल था। सिर्फ़ एक अकेले जीवन के परिवर्तन के मोड़ के इर्द-गिर्द बुनी गई उपन्यासिका 'कैट एँड माउस' में ग्रास ने अपने भारी, उपाख्यानात्मक रूप से विशिष्ट प्रथम उपन्यास के प्रकाशन के दो साल बाद स्वयं को बुनावट में माहिर सिद्ध कर दिया था, 'टिन ड्रम' में वर्णित ''चिल्लाते, क्षुधापीड़ित आर्केस्टा'' के चैम्बर म्यूज़िक में। उनकी इस क्षमता पर आलोचक और पाठक चकित थे। अब 'कैट एंड माउस' के दो साल बाद 1963 में महाकाव्य-सदृश्य ग्रन्थ के रूप में 'डॉग ईयर्स' प्रकाशित हुआ था, जिसके साथ ही इस लेखन की पहचान पक्की हो चुकी थी : हास्यास्पद रूप से विकृत का निरे वास्तविक ठोस से संयोजन, प्रयोगात्मक चपलता का सामाजिक दायित्व से समन्वयन, जैसे लेखक लार्स गुस्ताफसन ने 'टिन ड्रम' के स्वीडी-अनुवाद की समीक्षा में लिखा है। वह ओस्कार के अजीबोगरीब

जीवन-पथ का जायजा लेते हुए आश्चर्यचकित होकर इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, ''और अनोखी बात यह है कि पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर पाठक को मालूम पड़ता है कि वह जर्मनी और मध्य यूरोप को पहले से कहीं अधिक जानता है—नरसंहार के समय में भी और उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध की प्रवृत्ति के जीर्णोद्धार के समय को भी।'' विनोदशीलता और छोटी-छोटी बातों को महत्त्व देने की आदत हावी है और ये दोनों चीज़ें परस्पर-विरोध में नहीं हैं, 'डॉग ईयर्स' के प्रथम पृष्ठ पर उन वर्षों के इस कथन पर आस्था की घोषणा अंकित है।

ग्रास अपनी सर्वप्रसिद्ध रचना की तुलना में अभी तक 'डॉग ईयर्स' को बेहतर पुस्तक मानते हैं। ''नहीं जानता कि क्या बेहतर सही शब्द है। स्वभावत: प्रमुखत: उत्तम पुरुष द्वारा वर्णन होने के कारण 'टिन-ड्रम' अधिक सुसम्बद्ध है। अत: पाठक के लिए इस अर्थ में 'डॉग ईयर्स' से कम चुनौतीपूर्ण है, लेकिन मैं 'डॉग इयर्स' को अधिक जटिल और वर्णन के घटना-क्रम में अधिक साहसिक समझता हूँ। स्वभावत: पुस्तक में कुछ विखंडन है, परन्तु मुझे वह भी लुभाता है।''

तीन कहानीकार एक ही समय में अपनी पांडुलिपियों पर झुके बजूखे बनाने वाले एक कारखाने का अभिनन्दन ग्रन्थ लिख रहे हैं, विश्वसनीय रूप से वर्णित भिन्न-भिन्न स्वरों के कारण उत्तम पुरुष में लिखने की संभावना नहीं रहती, वे बीस के दशक का, नाज़ी युग और युद्ध का तथा युद्धोतर समय का वर्णन करते हैं, साथ ही वे जर्मनों की शताब्दी की भूमिकाओं 'शिकार', 'दर्शक' तथा 'अपराधी' का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। इन भागों को कलापूर्ण और विशिष्ट विचार-पद्धति के एक अनुयायी की दुहरी जीवनी के माध्यम में जोड़े रखा गया है।

ग्रास ने 'चार-दशक' में सार प्रस्तुत किया है, 'टिन ड्रम' और 'कैट एँड माउस' के बाद 'डॉग ईयर्स' के साथ लिखने और परिवर्तन की एक साढ़े-सात साल चली प्रक्रिया समाप्त हुई है। ''पीछे मुड़कर नज़र डालते, समय को खींचकर आगे लाते बदलते कथकों के वृत्तान्त में अब कुछ कहना शेष नहीं रह गया है।'' बाद में जॉन रेड्डिक द्वारा इन तीनों रचनाओं को इकट्ठा करके मोटे तौर पर एक शीर्षक दिया गया था ।'दांत्सिष गन्थ त्रयी' जो ओस्कार ही नहीं, बल्कि पुन: प्रकट पात्रों के माध्यम से भी परस्पर जुड़ी हुई है। ये रचनाएँ इन वर्षों में इनके लेखक जीवन में आए उत्थानशील परिवर्तनों का एक दस्तावेज़ हैं।

'टिन ड्रम' का कथक अन्त तक अपना शरणस्थल नहीं छोड़ता, केवल उसका 'उपन्यास' ही एक ऐसी दुनिया के नाम सन्देश है, जिससे वह नफ़रत करता है और जिससे वह तीन साल की उम्र से ही अलग-थलग रहा है। इसके विपरीत माल्के 'कैट एँड माउस' में पिलेंत्स की मुग्ध और साथ ही भयभीत दृष्टि के सामने इस

दुनिया को पराजित करने का बीड़ा उठाता है, लेकिन असफल रहता है और अन्त में बिना कोई सन्देश दिए एक बेकार पड़े बेतार द्वारा प्रसारित करने वाली कोठरी में गायब हो जाता है। अन्तिम अध्याय में सिर्फ़ आम्ज़ल और मार्टन का सहजीवी जोड़ा अपने भूमिगत ठिकाने से निकलकर एक ऐसी दुनिया में लौटता है, जो वास्तव में मुर्दों की दुनिया है। इस दुनिया में वह क्या करने वाला है, इस बारे में हम उतना ही कम जानते हैं, जितना 'विल्हल्म माइस्टर्स लेयरयारे' के या 'ग्रीन हाइनरिष' के बारे में, लेकिन गोएठे और केल्लर के नायक वास्तविकता से भागते नहीं, बल्कि स्वयं को उसके हवाले कर देते हैं।

मजबूरी में ग्रास ने भी वही किया है। वह 1960 में फ्रांस से अपने स्वैच्छिक निर्वास से लौटते हैं, क्योंकि वहाँ वह स्वयं को हमेशा अजनबी महसूस करते थे। पश्चिम जर्मनी की वास्तविकता में लौट आने के तीन वर्ष बाद वह वहाँ की गणमान्य हस्तियों में गिने जाते हैं—1963 में उन्हें एक सेक्रेट्री रखनी पड़ती है, एफ़ा पेनी, विवाहोपरान्त होनिश, जो तीस वर्ष उनका कार्यालय चलाती है। ''जब मैं बत्तीस साल का था तो ख्याति मेरे चरण चूम रही थी। तब से हमने ख्याति को अपना शिकमी किरायेदार बनाकर रखा हुआ है, 'फ्रॉम द डायरी ऑव ए स्नेल' में लिखा है, ''ख्याति एक ऐसी चीज़ है, जिस पर मूतने में लोगों को मज़ा आता सा लगता है।'' और इस बोध की बार-बार पुष्टि होती है; ग्रास को जितनी ज़्यादा ख्याति मिलती है, उतनी ही ज़्यादा उनसे डाह करने वालों की यह आदिम ज़रूरत बढ़ती लगती है, कई बार लगभग ज्यामितीय अनुक्रम में।

पतंगबाज़

रहनवर्द ज़रयाब **अनुवाद : नासिरा शर्मा**

मैं एक पतंगबाज़ हूँ। जबसे मैंने होश सँभाला है अपने को पतंग और माँझे में उलझा पाया है। बड़ी बेचैनी से वसन्त और गर्मी की ऋतु के गुज़रने का इन्तज़ार करता हूँ, ताकि जल्द-से-जल्द जाड़ा गुज़र जाए और मैं पतंग उड़ाऊँ। वैसे मैं हर रंग का माँझा इस्तेमाल करता हूँ—नीला, गुलाबी, पीला।

सफ़ेद और चित्तीदार, क्योंकि हर रंग एक ख़ास मौक़े पर भला लगता है। जैसे जब आसमान पर काली घटाएँ छायी हों तो सफ़ेद और चित्तीदार माँझा ठीक है। अगर धूप निकली हो तो पीला और जब आसमान साफ़ हो तो नीला रंग बेहतर है। क्योंकि माँझा ठीक से नज़र नहीं आता है। और बच्चों के लंगरों में बचा रहता है।

मेरी गली के सारे लड़के मुझे पहचानते हैं। मेरी इज़्ज़त करते हैं और कभी-कभी आकर मुझसे सलाह भी माँगते हैं। जब कभी आपस में शर्तें लगाते हैं तो मुझसे मेरी राय ज़रूर माँगते हैं।

चूँकि मैं एक पतंगबाज़ हूँ इसलिए मेरी नज़रें एक पतंगबाज़ की नज़रें हैं जो पहली नज़र में उड़ती पतंग के अन्दाज़ को ताड़ लेती हैं कि आसमान पर पेंच लड़ाने वाली पतंगों में कौन-सी पतंग कटेगी, कौन हारेगा और कौन जीतेगा।

जब कभी दो पतंग आपस में पेंच लड़ा रही हों और काफ़ी देर से एक-दूसरे को पैंतरे दिखा रही हों, उस वक़्त छत पर तमाशा देखते लड़के बेचैनी से मुझे पुकार कर पूछते हैं।

'याक़ूब..... कौन कटेगी?'

'वह ऊँची वाली लाल रंग की।' मैं उड़ती पतंगों को ग़ौर से देखकर जवाब देता। एक पल बाद वही होता है जिसकी भविष्यवाणी मैं करता। पूरे मोहल्ले में सिर्फ़ एक मेरे बराबर का पतंगबाज़ है जिसका नाम हमीद तुतले है। मुझे यह स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं है कि हमीद मुझसे पतंगबाज़ी में किसी तरह कम नहीं है। मुझसे कम अच्छी डोर नहीं खींचता और मुझसे कम पेंच नहीं जानता। बल्कि हम पतंगबाज़ी के फ़न में समान हैं, इसलिए हममें मेल है। हम कभी एक-

दूसरे के मुक़ाबले में खड़े नहीं होते हैं और कभी एक-दूसरे को काटते नहीं हैं।

हाँ, तो बता रहा था कि मैं एक पतंगबाज़ हूँ और हर इंसान की तरह एक पतंगबाज़ भी अपनी ज़िन्दगी में किसी दिलचस्प घटना से दो-चार हो सकता है और मेरे साथ जो घटना घटी थी उसे आज गुज़रे कोई चार साल के लगभग हो गए हैं, मगर उसकी याद आज भी ताज़ा है।

उस दिन दोपहर के खाने के वक़्त किसी ने दरवाज़े की कुंडी खटखटायी। मैंने जाकर दरवाज़ा खोला तो सामने हरी चादर में लिपटी एक लड़की को सामने खड़ा पाया, जो घबराई आवाज़ में पूछ रही थी—

''क्या याक़ूब आप ही हैं?''

''याक़ूब... हाँ मैं ही हूँ।'' मैं उसे देखकर बौखला-सा गया था। एकदम से चौंककर बोला, ''मैं आपकी नई पड़ोसन हूँ। कुछ दिन पहले हम आए हैं। मेरा भाई बीमार है। आपके माँझे ठीक करने की आवाज़ सुनकर वह बेचैन हो उठा और यह तीन रील सद्दी भेजकर आपसे कहलाया है कि क्या आप इस पर शीशा चढ़ा देंगे? चढ़ा देंगे?'' घबराहट भरी आवाज़ से उसने पूछा।

उसकी आवाज़ दिलनशीन थी। मुझे बड़ी मीठी लगी। हरी चादर से झाँकती उसकी काली आँखें चमकदार थीं और नाक और माथा सफ़ेद था। मुझे वह एक ऐसी सफ़ेद पतंग की तरह दिखी जिस पर काले धब्बे आँखों की तरह बने हों। उसका बूटा क़द उसके दुबले होने के कारण काफ़ी लम्बा नज़र आ रहा था। मैं गूँगा सा बना उसे ताक रहा था। एकाएक उसने झुँझलाहट भरे गुस्से से पूछा, ''शीशा चढ़ाएँगे या नहीं?''

''हाँ...चढ़ा दूँगा... चढ़ा दूँगा।'' मैंने घबराकर जल्दी से कहा।

उसने सफ़ेद खूबसूरत हाथ जो समन्दर की झाग की तरह लगे, अपनी चादर से निकाले जिसमें तीन रील सद्दी के थे। वे उसने मुझे थमाए। उसके नाख़ून लाल रंगे हुए थे। मैंने सद्दी पकड़ी और उसने पूछा, ''कब तक तैयार हो जाएगा?''

''परसों तक।''

वह चलने को मुड़ी तभी मेरे मुँह से निकल पड़ा, ''कौन-सा रंग चाहिए।''

''कौन-सा रंग होना चाहिए?'' उसने चेहरा मेरी तरफ़ मोड़कर मुझसे उलटा सवाल किया।

''क्या चित्तीदार बना दूँ?''

''हाँ, मैं कोई रंग ख़ास नहीं बता पाऊँगी। फिर भी अपने बचपने की तुतलाहट की आदत से तितदार पसन्द करूँगी बअमान-ए-ख़ुदा।'' वह एक मीठी हँसी हँसते हुए बोली। उसके जाने के बाद जब तक मैंने उसे दोबारा नहीं देखा तब तक वही

छवि मेरी आँखों में टिकी रही जो बार-बार दोहरा रही थी, ''अपनी बचपन की आदत के मुताबिक़ कहूँगी....तितदार।...बअमान-ए-ख़ुदा।' उसकी सफ़ेद पेशानी और दो काली आँखें मेरी नज़रों के सामने किसी पतंग की तरह नाचती रहीं और दिल में एक गुदगुदी-सी महसूस होती रही। दिल चाहा गुनगुनाऊँ।

''आपकी नई पड़ोसन.... आपकी नई पड़ोसन।''

माँ को सामने देखकर मैं एकाएक चहककर बोला, ''कैसा अच्छा पड़ोस मिला है।''

''क्या तुम उन्हें जानते हो?'' माँ ने पूछा।

''हाँ, मैं जानता हूँ।'' मैंने जवाब दिया। दो दिन तक मैं काम में लगा रहा। मेरे पास जितना मसाला था उसमें ख़र्च हो गया। वह अपनी मीठी आवाज़ और सफ़ेद पेशानी के साथ हाज़िर हुई।

''क्या डोरा तैयार है?''

''तैयार है।'' कहता हुआ मैंने माँझे की तेज़ी और मज़बूती को दिखाया, ''मैंने सफ़ेद और नीला रंग लगाया है, रंग बहुत अच्छा है। आसमान पर बादल हों तो यह रंग ठीक रहता है।''

''कितना दूँ?'' रंग को देखकर वह ख़ुशी से उछली फिर मेरे हाथ से चर्ख़ी छीनती हुई पूछने लगी।

मैं उसको सवाल का जवाब देने के बजाय उसे बताने लगा, ''यह चर्ख़ी भी शीशम की लकड़ी की है, बहुत मज़बूत है, अगर छत पर से नीचे आ गिरे तो भी नहीं टूटेगी। फ़ौलाद है फ़ौलाद।''

''कितना दूँ?'' उसने बीच में मेरी बात काटकर पहले दिन की तरह झुँझलाहट भरे ग़ुस्से से पूछा। उसके इस सवाल से मेरे सारे बदन से एक झिझक-सी लहराई।

''यह कैसे मुमकिन है कि मैं अपने पड़ोसी से पैसा लूँ?''

''यानी पैसा नहीं लेंगे?''

''नहीं।'' मैंने इनकार से सर हिलाया।

''ख़ूब। बअमान-ए-ख़ुदा।'' वह पहले की तरह मीठी हँसी हँसी। फिर मुझे ग़ौर से देखा और ख़ुदाहाफ़िज कहकर चली गई। उसके जाने के बाद मेरा दिल तेज़ी से धड़कने लगा और आवाज़ गूँजी, ''आपकी नई पड़ोसन हूँ।''

मैं घर के अन्दर गया और माँ को काम में व्यस्त देखकर चहका, ''कैसा अच्छा पड़ोस मिला है।''

''क्या उन्हें जानते हो तुम?'' माँ ने उसी तरह ठंडे लापरवाह लहज़े में पूछा।

''हाँ मैं जानता हूँ उन्हें।'' घमंड से भरकर मैंने इस बार जवाब दिया।

दूसरे दिन मैं छत पर खड़ा होकर उड़ती पतंगों को देख रहा था। हमीद तुतले की पतंग आसमान पर इस तरह से उड़ रही थी जैसे लड़ाई के मैदान में कोई बहादुर योद्धा। उसकी उड़ती पतंग का एक कोना सफ़ेद और तीन कोने नीले थे और किसी अज़दहे की तरह फुफकारती आसमान पर तैर रही थी और जिस तरफ़ बढ़ती उधर से दूसरी पतंगें ग़ायब हो जातीं, क्योंकि उनमें इतना दम नहीं था कि मुक़ाबले में खड़ी हो पातीं, बल्कि सभी उससे दूर छटक रही थीं। कुछ पतंग उड़ाने वालों ने अपनी पतंगें आहिस्ता नीचे उतारना शुरू कर दी थीं।

तभी एकदम से नए पड़ोसी की छत से एक पतंग उठती दिखी जो तीन कोनों से सफ़ेद थी और उसकी दुम और आँखें नीली थीं। यकायक पड़ोसी लड़की की याद आई और दिल में गुनगुनाहट गूँजी।

''मैं आपकी नई पड़ोसन हूँ।''

पड़ोसी की छत हम से ऊँची थी और उस पर ऊँची मुँडेरें खिंची होने की वज़ह से मुझे पतंग उड़ाने वाला नज़र नहीं आ रहा था। तो भी मैं अपनी रँगी सद्दी को देखना चाह रहा था कि वह कैसी लग रही है।

पड़ोस वाली पतंग ऊँची उठी। एकदम से मेरा ध्यान उस तरफ़ गया कि नीली दुमवाली पतंग तेज़ी से हमीद तुतले की पतंग की तरफ़ बढ़ रही है। मेरा बदन काँप उठा। मेरा दिल चाहा कि पूरी ताकत से चिल्लाकर कहूँ कि उधर मत बढ़ो। मगर देर हो चुकी थी और अब दोनों पतंगों की डोरें एक-दूसरे में उलझ गई थीं।

मेरे बदन पर एक तरह की उदास सुस्ती छा गई—इस ख़्याल से कि यह हमारा बीमार पड़ोसी लड़का अभी धुएँ की तरह आसमान में ग़ायब हो जाएगा। उस वक़्त मैं अफ़सोस से उस लड़की की तरफ़ नहीं देख पाऊँगा क्योंकि पतंग काटने के लिए सिर्फ़ डोर का अच्छा होना की काफ़ी नहीं है, बल्कि महारत और तजुर्बा भी बहुत ज़रूरी है, और ये दोनों चीज़ें हमीद तुतले के पास हद से ज़्यादा मौजूद हैं।

दोनों पतंगें काफ़ी दूर जा चुकी थीं और पतंग लड़ाने की जंग काफ़ी देर से जारी थी जिससे मुझे थोड़ी सी ढाढ़स बँधी कि हमारा पड़ोसी कोई अनाड़ी नहीं है। फिर मैं ख़ुद से कहने लगा—जब वह इतना अच्छा पतंगबाज़ है तो फिर उसने सद्दी पर शीशा चढ़ाने को मेरे पास क्यों भेजा?

अब दोनों पतंगें काग़ज़ के पुर्जों की तरह ऊपर आसमान पर तैरती नज़र आ रही थीं। हमीद तुतले की पतंग खड़ी ठहरी-सी आगे बढ़ रही थी और पड़ोसी की डगमगाती-सी आगे बढ़ रही थी। एकाएक पड़ोसी की पतंग नाचती हुई नीचे की तरफ़ आती नज़र आई। मुँह पर हाथों पर गोला बनाकर मैं ज़ोर से चिल्लाया, ''ढील मत दो! डोर को ताने रहो।''

पड़ोसी की डगमगाती पतंग सचमुच धीरे-धीरे नाचती हुई नीचे की तरफ़ गिरने-सी लगी। मैं झुँझलाया-सा सोचने लगा, 'यह बीमार लड़का सचमुच बहरा भी है।' मैं उसकी मुँडेर की तरफ़ लपका और दीवार से छत की तरफ़ जाकर उनकी मुँडेर पर चढ़ गया। आश्चर्य से मैं जम गया वहाँ पर पड़ोसन लड़की खड़ी थी, जिसके बाएँ हाथ में चर्ख़ी थी और दाएँ हाथ में डोर। बाल बिखरे हुए थे। परेशान और बेचैन नज़र आ रही थी। उसके पीछे जाकर मैंने धीरे से कहा, ''डोर को मज़बूती से तानो।''

''मुझसे नहीं सँभल रही है। ख़ुद आकर सँभालो।'' उसने धीरे से कहा, जैसे मेरा वहाँ इस तरह से जाना उसे बुरा नहीं लगा था। मैं छत पर कूदा और बड़ी मुश्किल से गिरती पतंग को नाथ पाया। धीरे-धीरे पतंग ऊँची पेंगें लेने लगी और अचानक से मैंने देखा कि तीन तरफ़ से नीली पतंग कटी हुई नीचे की तरफ़ तेज़ी से गिर रही है। चारों तरफ़ से छतों में एक शोर-सा उठा।

लड़की ने ख़ुशी के मारे चीख़कर कहा, ''काट...काट दिया उसे।'' फिर छत के दो-तीन बार ख़ुशी में चक्कर लगाए और ज़ोर-ज़ोर से नारा लगाया।

''जिन्दाबाद।''

''क्या हुआ ज़ैनब?'' नीचे से बूढ़ी आवाज़ उभरी।

''माँ हमीद तुतले को काट दिया।'' लड़की ने नीचे झाँककर जवाब दिया।

''अरे शैतान!'' बूढ़ी आवाज़ फिर उभरी।

हमारी गली नए पड़ोसी की तारीफ़ों से गूँजने लगी। सभी उस लड़के के बारे में बात कर रहे थे जिसे उन्होंने अभी देखा नहीं था, मगर उसने हमीद तुतले की पतंग काट दी थी। पहले दिन लोग आपस में बात कर रहे थे।

''तीन रील माँझा था जो हमीद कट गया।'' दूसरे दिन कहने लगे, ''दो रील माँझा था जो हमीद कट गया।'' बाद में फिर कहने लगे, ''एक रील माँझा था जो हमीद को काट पाया।''

आख़िर सब सौगंध खाकर कहते 'वल्लाह उसने...'

कई दिन इस घटना को गुज़र गए। वह दिन मैं छत पर खड़ा पतंग उड़ा रहा था। अकस्मात् देखता क्या हूँ कि तीन तरफ़ से सफ़ेद और काली दुम और धब्बे के साथ नए पड़ोसी की छत पर एक पतंग ऊपर उठी है। तेज़ी से ऊपर उड़ी और पल भर में मेरी पतंग के पास आ गई जैसे लड़ने की तैयारी में हो। मैं अपनी पतंग को उधर से खींच नहीं पाया, क्योंकि हाथ का सारा विश्वास जैसे ग़ायब हो गया था। ग़ुस्से से सारा वजूद उबल पड़ा और मैं बड़बड़ाया, ''अरे बेवक़ूफ़ लड़की।''

पतंगों की पेंचें लड़ना शुरू हो गई थीं और अब किसी पल भी दोनों की डोर

एक हो सकती थी। इस यक़ीन के साथ कि मैं पड़ोसी को अपने अनुभव से दबा लूँगा, अपने को दिलासा देने लगा कि महारत बड़ी चीज़ है। शुरू के तीन मिनट डोर बड़े अनुभवहीन अन्दाज़ से खिंचती रही, फिर एकदम से तड़पकर जो लड़ाई पर आमादा हुई तो उससे मुझे ऐसा लगा जैसे पिछले बीस साल पतंग उड़ाकर उसने यह महारत हालिस की हो। अब मेरा दिल हर बार पहले से ज़्यादा गुस्से और ख़ौफ़ से घबराने लगा। आस-पास की छत से लड़के आँखों पर हाथ रखे बड़े ध्यान से लड़ाई को ताक रहे थे। उनकी आँखों में मेरे प्रति आदर और कौतूहल के भाव थे। मेरे दिल की धड़कन बढ़ने लगी। हवा तेज़ नहीं थी, इसलिए पतंगें ऊपर न जाकर क्षितिज की तरफ़ बढ़ रही थीं और उनकी डोर नीचे की तरफ़ आ रही थीं और पतंगें छतों के नज़दीक होती जा रही थीं।

''बहुत हो गया बस अब खींचो'' मैं अनायास तेज़ी से चीखा। किसी ने जवाब नहीं दिया, बल्कि जवाब में शैतानी से भरी लड़की की हँसी की आवाज़ सुनाई पड़ी। इसके बाद मैंने डोर को ताना और उसे खींचने लगा। डोर धीरे-धीरे करके ऊपर उठने लगी मुझे उम्मीद बँध गई कि मेरी पड़ोसन भी तानेगी, मगर वह उसी तरह से डोर को ढील देती रही और तेज़ी से डोर आगे छोड़ती जा रही थी। यह देखकर मैं गुस्से से चीख़ा, ''खींचो।''

ग़ुस्से से मैं सुन्न पड़ने लगा और मेरा हाथ ढीला पड़ गया। और आस-पास की छत से एक साथ ताज्जुब भरी आवाज़ गूँजी, ओह।

मेरी पतंग कट गई थी। डोर मैंने छोड़ दी। छत से नीचे दीवार पर चढ़ा। जो भी गाली मुझे याद थी वह मैं उस लड़की पर क़ुर्बान करना चाहता था। इस इरादे से मैं उसकी मुँडेर की तरफ़ लपका और ऊपर चढ़ते ही जो मंज़र देखा उससे मेरी नज़रें सामने की छत पर जमी रह गईं। गला सूख गया। हाथ-पैर ढीले पड़ गए। पतंग की डोर हमीद तुतले के हाथ में थी। पड़ोसी लड़की उसी तरह ख़ुशी से छत के चक्कर लगा रही थी। नीचे से आवाज़ आई, ''क्या हुआ ज़ैनब?''

''माँ याक़ूब को काटा।'' उसने छत से नीचे झाँककर कहा।

''अरे शैतान!'' बूढ़ी आवाज़ दोबारा उभरी।

हमीद तुतले पतंग को आहिस्ता-आहिस्ता नीचे उतार रहा था और बिना लड़की की ख़ुशी की तरफ़ ध्यान दिए वह कह रहा था—जब प्रतिद्वन्द्वी डोर ताने तो तुम ढील छोड़ो... तेज़ी से ढील छोड़ो।

टेरेज़ीएनश्टाट्ट

रूथ कल्यूगर

अनुवाद : प्रशान्त पांडे

इतिहास प्राय: हमें यहूदियों की कीमत पर बुरे मज़ाक करने की स्वीकृति देता है, जैसे कि टेरेज़ीएनश्टाट्ट का दुर्ग गणना के अनुसार अस्ट्रिया में यहूदी सशक्तिकरण के सम्राट जोसेफ द्वितीय द्वारा बनवाया गया था या वहाँ मेरे समय, सितम्बर, 1942 से मई 1944 तक चेक कैदी थे जो उस जगह को नियुक्त लोगों से पहले से जानते थे और उसे अभी दूसरी बार कैदी के रूप में अनुभव किया था। यह विवेकपूर्ण योजित किया गया था, आम जनता के लिए सड़कों का एक छोटा ग्रिड और अपनी सैनिक-सेवा पूरा कर रहे सैनिकों के लिए बैरक थे। यह हमेशा एक गरीब छोटे शहर की तरह रहा था, किसी स्पा की तरह नहीं, फ़रदीनान्द फ़ॉन जार, सदी के प्रारम्भ के दोयम दर्जे के ऑस्ट्रियाई लेखक एक प्रेम-कहानी में लिखते हैं, उस लेख को 'गिनेब्रा' नामक शीर्षक देते हैं।

मैं 20 साल का था और एक रेजिमेन्ट में भावी ऑफ़िसर था, जो कि टेरेज़ीएनश्टाट्ट के शान्ति की लिए अधिकृत सेना का एक भाग थी, सम्भव है यह दुर्ग ब्योमेन के सबसे धन्य क्षेत्रों में एक है और एक अनोखी स्थिति में है—इसके अलावा यह आज भी कोई ज़्यादा सुखद रहने वाली जगह नहीं है, लेकिन उस समय 40 के दशक में इसे बिल्कुल उदास की संज्ञा दी जा सकती थी, क्योंकि रोपे हुए पेड़ों की दो शृंखलाओं के साथ प्रमुख जगह के अलावा, जो सैनिकों के लिए बनी इमारतों से होकर गुज़रने पर दीखता है, वहाँ पर केवल चार लेन थे, वे हवा की उपयुक्त दिशाओं में दरवाज़ों और टीलों की तरफ जाते थे और ज़्यादातर छोटे और झोपड़ीनुमा घरों से बने होते थे, जिनमें व्यापारी और कारीगर, बियर और पुरानी दारू की दुकानों वाले रह चुके थे।

टेरेज़ीएनश्टाट्ट को हिटलर के समय में यहूदी टोले नाम से जाना जाता था, आज इसकी गणना यातना-शिविरों में होती है। मैंने भी इसे 'घेटों' की संज्ञा दी और इसे आउस्विट्स, दाखाऊ और बुखेनवाल्ट से अलग बताया, जिसके नाम मैं जानती

थी, हमें सबसे पहले हमारे घरों से निकला गया और यहूदी घरों में भरा गया, अब हमें यहूदी-बस्तियों में निपटाया जाना चाहिए था, इसलिए इसे घेटो कहा गया। ऐसा तर्क दिया गया, फिर भी प्रश्न उठता है, क्यों यह अभिव्यक्ति अनुचित है। एक घेटो सामान्य भाषा प्रयोग में निकल कर लाए गए लोगों का कारागार नहीं रहा है, बल्कि शहर का एक हिस्सा रहा है जहाँ यहूदी रहते थे, जबकि टेरेज़ीएनश्टाट्ट एक स्थान था, जिसका सम्बन्ध कसाईखाने से था।

आउस्वित्स बिर्केनाऊ में मैं समझती थी कि मैं यातना शिविर में थी, 'विनाश-शिविर' शब्द तब नहीं था, मेरा तीसरा शिविर, जिसके नाम पर कोई ध्यान देना चाहता है, क्रीस्टियानस्टाट कहलाता था, यह ग्रोस रोजेन का एक बाहरी शिविर था, वह भी एक यातना शिविर, और कार्य-शिविर के नाम से सूचित किया जाता था, ज़्यादातर लोग उदासीन थे और मेरे सन्दर्भ में मेरे अच्छे परिचित और मेरे अपने बेटे, छोटे शिविरों के नामों को याद नहीं रखने का कारण है कि लोग शिविरों को सम्भवत: एक इकाई के रूप में बड़ी पट्टियों के साथ प्रसिद्ध हुए यातना-शिविर चाहते हैं। यह विवेक और भावना के लिए अवकलनों की चर्चा से कम थकाऊ है, मैं इन भेदों पर अडिग हूँ, अवगत होते हुए भी खतरा मोल ले रही हूँ, यदि बिना मन के भी, महिला पाठक, (पुरुष पाठकों के साथ भी ऐसा ही है? जो केवल दूसरे पुरुषों का लिखा हुआ पढ़ते हैं) उपदेशों के जरिए, जो उसके लिए सामान्यत: आंशिक रुप से सामान्य मनोविज्ञान पर निर्भर हैं, खीझने के लिए या विश्वास में बिलकुल अनदेखा करने के लिए कि यह एक अच्छी चीज़ के संकल्प के लिए होता है। अर्थात् काँटेदार तार के आवरण को नष्ट करने के लिए, जिसे युद्ध के बाद के विश्व ने शिविर के सामने टाँग दिया है, उस समय और इस समय के बीच का यही विभाजन है, हमारा और उनका, जो सच्चाई नहीं बल्कि आलसीपन के लिए ज़्यादा उपयोगी है। दर्शक पीड़ितों से पूर्ण रूप से अलग किए जाते हैं, और सम्भवत: यातना-शिविर-संग्रहालयों का भी एक कार्य है, जो इससे अपने स्पष्ट और कथित कार्य के ठीक उल्टा तक पहुँचता है। धारण क्षमता के लिए यह और सरल है, यदि 'शिविर' शब्द इस व्यवस्था पर सभी जानने लायक चीज़ों का खाक़ा बनाती है। और सारे पीड़ित ऐसे होंगे, संक्षेप में सारे शिविर एक समान थे।

जैसे हाल ही में मैंने अखबार में एक शोध-प्रायोजना के बारे में पढ़ा, जो पहले के यातना शिविर के बन्धकों के बारे में था, जो दुस्वप्न से पीड़ित हैं, उनकी तुलना ऐसे लोगों से की गई, जो शान्त नींद पर खुश होते हैं, और उनके लक्षणों और वर्तमान जीवन की स्थितियों में अन्तर खोजा गया। जो उन्होंने शिविर में अनुभव किया था उसे किनारे कर दिया गया, यह पता था। मैं कहती हूँ, उसके विपरीत, हम

जो जानते हैं, वह वर्तमान है। शोध करने वाले मनोवैज्ञानिकों ने कुछ नया पता नहीं लगाया, बल्कि सीधे सतही विश्लेषण किया, वह जो वे जानते थे, वर्तमान, मेरा मतलब है, अवश्य पूछा जाना चाहिए, कैसे इन शोध प्रायोजनाओं का उस समय सम्पादन हुआ। उनका काराग़ार में बिताया समय प्रायोजना का आधार था, यह कैसे अरुचिकर हो सकता है? कैसे विभिन्न चीजें उनके साथ शिविर में घटित हुई हैं और प्रस्तुत हुई हैं? या फिर शायद वे जो बुरे स्वप्न देखते थे, उत्पीड़ित किए गए थे और दूसरे नहीं। बुरी चीजों की भी नज़दीक से जाँच की ज़रूरत है। काँटेदार तार के आवरण के पीछे भी सभी एक जैसे नहीं होते, यातना-शिविर एक तरह के नहीं होते हैं। वास्तव में यह वास्तविकता भी हर एक के लिए अलग थी।

अत: यह 'घेटो' टेरेज़ीएनश्टाट्ट है। प्राय: लोग मेरे पास आते हैं, जो मुझसे कहते हैं, ''मैं उसे या उन्हें जानता हूँ जो टेरेज़ीएनश्टाट्ट में था, आपको वह या वे याद हैं?'' मैं कभी इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकी हूँ, टेरेज़ीएनश्टाट्ट कोई गाँव नहीं था, जहाँ कोई शान्ति से सभी पड़ोसियों को जान सके और उनके साथ सामाजिक हो सके। टेरेज़ीएनश्टाट्ट एक होकर जाने वाला शिविर था। कुल मिलाकर लगभग 1,40,000 लोग टेरेज़ीएनश्टाट्ट लाए गए हैं, उनमें से युद्ध के अन्त में 18,000 एक बार नहीं छुड़ाए जा सके। मैं वहाँ 40 से 50 हजार लोगों के साथ रहती थी, जिसमें कानूनन केवल 3500 सैनिक और नागरिक रह सकते थे।

मेरे लिए टेरेज़ीएनश्टाट्ट सबसे पहले लोग थे, विएना जहाँ से मैं हूँ, वह हॉस्पिटल का बगीचा रहा था। एकाकीपन और एकान्त मेरे अन्तिम महीनों की बात थी। यहाँ मैं एक बार लोगों से खचाखच भरी जगह पर आई थी, जहाँ सभी यहूदी-सितारा धारण किए हुए थे और इसलिए सड़क पर किसी भी फासले पर कोई दिखाई नहीं पड़ता था, जहाँ निश्चित रूप से एक के बाद दूसरी महामारी भी फ़ैल रही थी : इन्सेफल्तिस, अनिन्द्रा, जब हम लोग आए तो कम हो रही थी, इसी बीच पीलिया इन सब के बाद आया, जो मेरी माँ को भी हुआ (मैं उसे नीबू की तरह पीली देखती हूँ, अविश्वास्य रूप से पीली, ऊपर वाले ऊँचे बिस्तर में लेटे हुए, बीमार लोगों के बैरक में वह जा नहीं सकती थी या जाना नहीं चाहती थी।) और गैस्ट्रोएन्त्रिटीस, माल-वाहक आए, दूसरे लोग भेजे गए, बिस्तर खाली हुए, फिर से भरे गए, मृत्यु के समाचार रुके नहीं, वे दिन भर आते थे।

वृद्धों और बीमारों के बीच, जो वहाँ बहुत लोगों के साथ मरे, मेरी दादी क्ल्युगर भी उसी में थी, मेरे पिता की माँ। उसने नौ बच्चे और एक सौतले बेटे का लालन-पालन किया था। उनमें से बाहर जाने वाले किसी ने उसे अपने साथ नहीं लिया। स्वभावत: इसमें कुछ विचित्र नहीं था। हमारे पिता ने भी हमें साथ नहीं लिया

था। पुराना विचार या फिर ज़्यादा पुरानी धारणा कि महिलाओं की रक्षा और आड़ पुरुषों द्वारा की जाती है, यह इतना निहित और अन्तर्निहित था कि सबसे प्रत्यक्ष को भी ऊपर से देखा गया, अर्थात् कितने बेचारे अभी अति कमज़ोर और समाज में भेदभाव सहने वाले लोग हैं। नाज़ी नारियों के सामने रुकेंगे, यह नस्लभेद की विचारधारा का विरोध था, क्या इस असंगत, पितृसतात्मक लघु संक्षेप के जरिए कोई अपनी वीरता पर भरोसा कर लेता था? यहाँ तक की थियोडोर हेल्र्सल, हमारे नायक और उस समय के मुख्य सिद्धान्तवादी ने विश्वास कर लिया है कि यहूदी पत्नियों के लिए अपने पतियों के साथ विशेष मित्रवत बर्ताव अनिवार्य था क्योंकि केवल मर्द यहूदियों के प्रति घृणा के शिकार थे। उनके नाटक 'नया घेटो' में छानबीन करने पर यह पाया गया, यह रवैया पूरा सही और ईमानदार था, यह मेरे लिए कल्पनातीत है, और इसके लिए मैं उस पीढ़ी से भी सम्बन्ध रखती हूँ, जिसने इस मिथ्या धारणा की कीमत चुकाई।

मेरे पिता की माँ की मृत्यु एक बन्दी के रूप में हुई, एक बड़े और रोगी कक्ष के तरह के बड़े कमरे में जो रोगियों से भरा था, जिनकी उस स्थिति में मदद नहीं की जा सकती थी। मेरी माँ जो ज़्यादातर और आसानी से साथ रहने वालों की निन्दा करती है, उसने स्नेह और मानवता के प्रतीक के रूप में अपनी सास की पूजा की है, उसने उसमें अवश्य अपनी खुद की बेचारी माँ का विपरीत रूप देखा है। एक महिला, जो हमेशा सेवा करती है, ध्यान रखती है, निर्भर थी मर्दों पर, पैसों पर, तंग करने वाले खुद की खोज पर, जिसने उसे इस उम्र में हैपोकेन्द्री की ओर बढ़ा दी। इसके विपरीत मेरे पिता की माँ बच्चों, नज़दीकी और दूर के रिश्तेदारों के लिए उपस्थित रहती थी, गरीबी में भी उदार रहती थी। उसके पास हर किसी का दिल से नमस्कार और सत्कार होता था, क्योंकि वह नियमानुसार ख़ाना पकाती थी, ''जहाँ दस के लिए पर्याप्त ख़ाना है, वहाँ और ज़्यादा मात्रा में खाना बनता था'' उसके बाद रख रखाव में भागीदारी करते थे। वह बहुत पहले मर गई, अकेली और एक बड़े दुर्भाग्य में, जैसे उसे हमेशा मिला था। सभी बहुत सारे बच्चों, रिश्तेदारों और दोस्तों में से, जिनके लिए उसने हमेशा मेज पर गर्म ख़ाना रखा था, केवल मैं और मेरी माँ ही थे जो अन्त तक उसके साथ थे। दूरदर्शिता से उसने मेरी माँ को अन्त तक, जब यह बहुत देर उसके बिस्तर पर बैठी थी, चेतावनी देते हुए अलग भेज दिया, ''बच्चे अब सोने जाओ'', ये अन्तिम शब्द थे जो मेरी माँ ने उससे सुने।

टेरेज़ीएनश्टाट्ट उतना बुरा नहीं रहा है, प्रिन्सटन में मेरे सहकर्मी की जर्मन पत्नी ने मुझे सूचना दी, जिसे अपने बाद में जन्म लेने की खुशी थी, क्योंकि हम लोगों को अमरीकी प्रथा के अनुसार एक-दूसरे को नाम से बुलाना चाहिए, हालाँकि हमारी

दोस्ती नहीं थी, उसे यहाँ गिसेला कहा जाना चाहिए। वह सतही स्तर पर दिमाग़ से भी तेज़ थी, सिनेमा को लेकर मेरे जुनून का वह उपहास करती थी और उसके ख़िलाफ़ ओपेरा के प्रति अपना जुनून दिखाती थी। मेरे आशंकित बाड़ा पेन्टरों के विपरीत, जो अपने खुद के लोगों पर भरोसा नहीं करते हैं और पीड़ितों को आदर्श रूप में प्रस्तुत करते हैं, उसकी इच्छा थी सारी घटना को अपने संकुचित कल्पित संसार में व्यवस्थित करने की। युद्ध के सारे अनुभवों को समान स्तर पर लाना चाहिए था, अर्थात् एक स्वीकृत जर्मन अन्दरूनी आवाज़ का, जिसे शान्त कराया जाए, ऐसी पक्षपात करने वाली है एक तरह की भय की भावना, जिसमें सारे शिविर, जैसे कि एक भयंकर कुहासे से धुँधले हो रहे हों, जिसमें वैसे भी कोई अकेली चीज़ पहचानी न जा सके, फिर इसकी कोशिश क्यों? वे सुनना नहीं चाहते हैं कि टेरेज़ीएनश्टाट्ट के अन्त में मुझे एक बच्चे के लिए एक बेहतर वातावरण मिला, जैसे अन्तिम क्षण का विएना, यह वे सुनना नहीं चाहते हैं क्योंकि यह उनकी सोच की साफ सीमा रेखाओं को टालती है। और लोग मेरी गिज़ेला की तरह उल्टा करते हैं, वे अपनी दिनचर्या के गद्दीदार सोफे से उठने और खिड़की से देखने से मना कर देते हैं। सूचनाओं द्वारा धीमे किये, बाहर से आए हुए कोंच या परिज्ञान, चिन्तन के जरिए निमित कठिनाइयाँ, अपने संक्षेप खींचते हैं और ध्यान नहीं देते हैं कि कितनी ज़्यादा उनकी अनभिज्ञ तुलना कष्ट देती है, गिजेला का लाल बुझक्कड़पन स्पष्ट रूप से आक्रामक था। निश्चय ही वह सभी चीज़ों के बीच मेरा बुरा मान गई कि मैं गर्म मौसम में लम्बा आस्तीन नहीं पहनती, या दूसरे तरह से, कुछ सजावट के जरिए टट्टू के तरह आउस्वित्स नम्बर का रूप बदलना चाहती थी—''एक घेटो बूढ़े लोगों और यहूदी युद्ध दिग्गजों के लिए'' टेरेज़ीएनश्टाट्ट रहा है। यह सामान्य सम्भापी टेरेज़ीएनश्टाट्ट के ऊपर मेरे रिपोर्ट पर प्रफुल्लित होकर शब्दों में टिप्पणी करेगी, ''ऐसा भी! हालाँकि ख़ूबसूरत विएना से इस घेटो में कहीं अच्छा था।''

आज मेरे लिए टेरेज़ीएनश्टाट्ट खोए हुए लोगों की यादों की एक शृंखला है। एक तन्तू है, जिसे आगे विकसित नहीं किया गया। टेरेज़ीएनश्टाट्ट भूख और बीमारी था, अधिक प्रदूषित था। घेटो अपने मिलिट्री जाली के तरह विशेष सड़कों व जगहों से और उसमें सीमा के रूप में एक पनाह था जिससे होकर मैं बाहर नहीं जा सकती थी, और अधिक जनसंख्या जिसने कभी-कभी एक कोने को ढूँढ़ना लगभग असंभव बना दिया, जहाँ कोई किसी दूसरे से बात कर सकता था, अत: यह एक जीत थी यदि कोई थोड़ी कोशिश से एक ऐसी जगह टोह लेता। बाहर एक वर्ग मीटर से ज़्यादा हिलने की आज़ादी नहीं थी, और शिविर के भीतर त्वचा और बाल के साथ किसी ने एक नामरहित इरादा प्रकट किया था, जिसके जरिए कोई हर समय

एक अस्पष्ट कथित भयंकर शिविर में आगे भेजा जा सकता था। क्योंकि टेरेज़ीएनश्टाट्ट, इसका मतलब था मालवाहक को पूरब में भेजना, जो प्राकृतिक आपदाओं के तरह अप्रत्याशित अन्तराल में घटित हुए। यह हमारे अस्तित्व के सोचने की रूपरेखा का ढाँचा था, यह लोगों का आना जाना, जो खुद अपने पास नहीं हैं, उनका उस पर कोई प्रभाव नहीं था कि क्या और कैसे उनको अधिकार में लिया गया, और वे एक बार नहीं जानते थे कि कब और फिर एक बार उन्हें अधिकार में लिया जाएगा, केवल यह अभिप्राय शत्रुवत था।

जब हम लोग पहुँचे और रहने की स्थिति को अनुभव किया, अर्थात् बहुत सारे लोग एक छोटे और बहुत लोग एक उससे बड़े कमरे में, यहूदी शिविर प्रशासन के एक नौज़वान आदमी ने मेरी माँ को मुझे अनाथालय में रखने की सलाह दी। वहाँ वह जब जब चाहती मुझसे भेंट कर सकती थी, और मैं भी उससे और अन्यथा अन्य बच्चों के साथ रहती, ऐसा अच्छा रहता कहीं और बूढ़े लोगों के साथ रहने से।

छोटे शहर के बन्द गिरिजाघर के दोनों तरफ दो पूर्व सुकुमार अधिकारी बैरक थे, ल 410 और 414। एक में यहूदी शिविर प्रशासन ने तकनीकी और दूसरे में जर्मन भाषी बच्चे समायोजित किए थे, मैं ल 414 में लाई गई, सबसे युवा या दूसरे सबसे युवा लड़कियों के समूह में। ल 414 मेरे बहुतेरे पतों में से एक है जिसे मैं नहीं भूली हूँ। मुझे बिल्कुल भीतर आने की खुशी होती, क्योंकि यह जगह सबके लिए नहीं है, यह हमारे लिए निश्चित किया गया था।

प्रारम्भ में मैंने इसे सचमुच अलग तरह से देखा। हम तीस हमउम्र लड़कियाँ एक कमरे में थीं, जहाँ दो या तीन आराम से रह सकते थे। वह कोई सोने का कमरा नहीं था, वह हमारे रहने की जगह थी, केवल एक स्नानघर का काम भी वही करता था। नहाने के लिए लोग ठंडा पानी कटोरे में लाते, साबुन एक खजाना था। जब यह ठंडा रहता तब लाग कोलाहलपूर्ण दाँतों को कटकटाते। तलघर में स्नानघर था, वहाँ हम सारे दो सप्ताह गर्म नहा सकते थे, गर्म पानी मुश्किल से खुला था, वहाँ फिर पहले से ऊँचा था, लोगों को प्रयोग के लिए तेज़ होना पड़ता था। हमलोग पुवाल की गद्दी पर सहायिकाओं में अकेले या दो लोग एक साथ सोते थे, वे पहले भूख के हफ़्ते थे, क्योंकि विएना में मुझे भर पेट खाने को मिला था। निरन्तर भूख के बारे में कोई कम कह सकता है; वह हमेशा है,और जो हमेशा है उसके बारे में कहना उबाऊ होगा। वह कमज़ोर करता है, क्षय करता है। वह दिमाग़ में जगह सुरक्षित करता है, जो सोचने के लिए आरक्षित होती है। थोड़े खाने से कोई क्या कर सकता है? काँटे से हमलोग फेन पर मारते थे, मैं कोप पर, सबसे प्यारा मनबहलाव। यह घंटों समय ले सकता था, हमें खुद के लिए खेद नहीं हुआ, हम खूब हँसे, हमने

शोरगुल किया, और धमाल किया, हमारा विचार था, ''लाड़ प्यार किए हुए'' बच्चों की तरह मजबूत होना ''बाहर''।

पेशाबखाने के साामने हमेशा एक क़तार होती थी। टाइमिंग से परिचित होना फ़ायदेमन्द होता था, जिसमें कोई कम भीड़ की आशा कर सकता था। यदि मुझे सही से याद है तो हर मंजिल पर दो पेशाबखाने थे। इमारत में हज़ारों बच्चे थे, उसमें से उनका आधिक्य था जो डायरिया, अर्थात शिविर में हमेशा रहने वाली बीमारी से पीड़ित थे।

कौन सी बीवी ?

रूडोल्फ़ पाइयर अनुवाद : अमृत मेहता

ईदा बारजे के दरवाज़े पर बैठी है, उसके घुटनों पर फफूँदी के धब्बों भरा एक जूते का डिब्बा है। इस डिब्बे में उसने अपने परिवार के इतिहास के चित्र लगा रखे हैं, अपनी शादी तक। जब भी घर में यह डिब्बा निकाला जाता है तो ईदा के सामने हर बार एक न एक भूली-बिसरी कहानी आ जाती है, युवावस्था का कोई घर की याद दिलाने वाला दृश्य, कोई न कोई भावनात्मक चोट।

ईदा उसके सामने पन्ने ऐसे पलटती है, जैसे कोई किसी कार्ड-सूचिका को देखता है, कभी यहाँ, कभी वहाँ, और फिर आगे से पीछे तक और दुबारा आखिर से शुरू तक।

शताब्दी के मोड़ के फ़ोटो, कड़ी दृष्टि से देखते परदादा-परदादी।

दादा और दादी, अखरोट के एक विशाल वृक्ष के नीचे बेंच पर, हाथ में हाथ डाले।

दादा का भाई, बिसमार्क जैसी बड़ी-बड़ी मूँछें, सिर पर गुँथा हुआ फूलों का हार।

ईदा के माता-पिता दुल्हा-दुल्हन बने।

ईदा दूध पीती बच्ची के रूप में, नंगी और रोती हुई।

ईदा के पहले कदम।

ईदा बस्ता उठाए।

ईदा की स्कूल में अन्तिम क्लास।

ईदा का बीसवाँ जन्म-दिन लाल शराब के साथ (पहला रंगीन फोटो)।

ईदा मैडम और यीवेट के साथ वेल्स में।

ईदा पीटर-चर्च के सामने—

उसका पति ईदा को कई बार फूँक मार कर धूल उड़ाते देखता है, सिर हिलाते। ईदा चित्रों में खोई होती है, ऊपर नहीं देखती, एक शब्द भी नहीं बोलती ।

जब वह अपने इतिहास का अन्तिम चित्र पलट देती है, वह आ जाता है।

एक मित्र।

एक दूल्हा।

दोनों दूल्हा-दुल्हन के रूप में चर्च की सीढ़ियों पर।

और फिर छुटका मार्टिन आ गया।

मार्टिन, दूध पीता बच्चा।

मार्टिन के पहले कदम।

मार्टिन बस्ता उठाए।

और फिर छुटकी गेर्डा आ गई।

और फिर पिछले पच्चीस वर्षों का शेष—

लेकिन ये फोटो फफूँदी के दाग़ों से भरे जूते के डिब्बे में नहीं पड़े हुए। ईदा के परिवार का दूसरा इतिहास चिपका कर रखा गया है, अटल, नई एल्बमों में हर फोटो पर तिथि और स्थान का नाम लिखा है, लाल, हरी और काली पक्की स्याही से, ईदा के हाथ से पुरानी जर्मन लिपि में। एल्बमों के चौड़े, सुनहरे रंग वाले निचले हिस्से कालक्रम के अनुसार रैक के बीच वाले तख्ते पर लगे हैं।

परिवार के इतिहास के पन्ने पलट कर देख चुकने के बाद वह फफूँदी के दाग़ों वाले डिब्बे को वापस दुछत्ती पर पड़ी चर्राती अलमारी में रख आती है।

लेकिन शाम को ईदा के पति को अपनी आँखों पर यकीन नहीं आता, जब वह अपनी रद्दी को टोकरी में फेंकी गई रद्दी पर सबसे ऊपर ईदा की तीन फोटो पड़ी देखता है। वह उन्हें उठा लेता है और उन्हें लिखने-पढ़ने की चीज़ें रखने वाले तख़्ते पर रख देता है। क्योंकि ईदा को बाद में अपनी आज की सनक पर पश्चात्ताप होगा। वह जानता है।

वह भी दुछत्ती पर पड़ी उसी चर्राती अलमारी में से लाल फूलों वाला बिस्कुट का एक डिब्बा निकालता है, उसके परिवार का इतिहास। वह अपने वाले संग्रह में फ़ालतू फ़ोटो भी मिला लेगा, कम से कम अभी के लिए, क्योंकि उसने तीन चित्रों पर ज़रा सी नज़र मारी है और उसे अभी तक समझ नहीं आया कि ईदा अचानक उनसे अघा क्यों गई है।

जब वह अभी अपना डिब्बा निकालकर लाया ही था कि उसने देखा कि फ़ोटो उसकी मेज़ से ग़ायब हो चुकी है।

इतनी ज़ल्दी पश्चात्ताप? यह सोचता है।

लेकिन तभी उसकी नज़र रद्दी की टोकरी पर पड़ती है।

फ़ोटो वहाँ पड़ी हैं।

टुकड़े-टुकड़े।

वह जाकर ईदा से पूछता है, ''ऐसा क्यों किया?''

और ईदा कहती है, ''बेढंगी फ़ोटो है! ऐसी तो मैं कभी नहीं दिखती थी।''

''अगर तुम कभी ऐसा नहीं दिखी तो मुझे डर है कि तुम अभी भी वैसी नहीं दिखती जैसी तुम दिखती हो, ''उसका पति कहता है और फिर से रद्दी की टोकरी की ओर मुड़ जाता है।

हालाँकि हर फ़ोटो के सिर्फ़ तीन-तीन टुकड़े किए गए हैं, फिर भी उसे सारे टुकड़े इकट्ठे करने के लिए आधी टोकरी को छानना पड़ता है।

ईदा के सर्वोत्तम वर्षों के श्वेत-श्याम चित्र:

ईदा, समुद्रतट पर, दो सहेलियों के बीच, उसकी मांसल देह पुराने फैशन के एक स्विमिंग कॉस्ट्यूम में भिंची हुई।

ईदा, अपनी दो सहयोगी लड़कियों के साथ, होस्टल की लड़कियाँ, कमर पर एक पतली डोरी बाँधे, दाईं टाँग ऊपर तक की स्कर्ट में से ढीठता से आगे को लम्बी की हुई।

अब वह चित्रों को बहुत ध्यान से देखता है, हालाँकि उनके फटने की जगह से रेशे हल्के से निकले हुए हैं, फिर भी अलग-अलग हिस्सों को इकटठा रखने पर देखने में कोई परेशानी नहीं होती। सभी फोटो, जैसे संयोगवश दो बार चौड़ाई की तरफ़ से फटे हैं, दो समानान्तर धज्जियाँ, सिर शरीरों से अलग और शरीर टाँगों से अलग।

हर चित्र पर वही, मदमस्त जवानी बिखेरती ईदा नज़र आ रही है, अभी माथे और नाक के मध्य उम्र बढ़ने की सिलवटें नहीं बनीं।

ईदा, अभी संशयहीन सर एक ओर झुकाए हुए।

ईदा, अभी न ही उसकी ढीली लटकती बाँहें हैं और न ही उन पर ढीले लटकते हाथ।

वह अन्दाज़ा लगाता है, क्यों ईदा इन चित्रों से छुटकारा पाना चाहती है।

अब वह आकर्षक डिज़ाइन का पुलोवर नहीं पहनेगी—अब वह ऊपर जाँघों तक कटी स्कर्ट में से टाँग ढीठता से बाहर नहीं फैलाएगी—अब वह अपनी मांसल देह को स्विमिंग कॉस्ट्यूम में नहीं भींचेगी और पतली कमर दिखाने योग्य नहीं होगी।

क्या ईदा को, उसकी आज की ईदा को, तब की ईदा पर गर्व नहीं होना चाहिए?

वह अपनी युवावस्था के आकर्षण को ही क्यों टुकड़े-टुकड़े कर रही है?

क्यों वह कभी दिलकश रह चुकी एक औरत को कचरे में फेंक रही है?

और कचरे के ड्रम में मछली के काँटों और चिपचिपे टमाटर के बीजों के बीच क्यों नहीं, जहाँ उन पर फिर किसी की नज़र नहीं पड़ेगी?

रद्दी की टोकरी में क्यों, और वह भी अपने पति की?

या कि ईदा वास्तव में फटे हुए चित्रों वाली ईदा है ही नहीं?

या कि ईदा भूल चुकी है कि तब ईदा कौन होती थी?

उसके सामने मेज़ पर पड़ी एक बड़ी और एक सी जवान और एक सी खूबसूरत चित्रों के समानान्तर टुकड़ों में फटी लड़कियाँ उसे उन्हें एक साथ लगाने पर बच्चों के उस पुराने खेल की याद दिला रही हैं, जिसके अनुसार वह तीन मनहूस और धिक्कार योग्य ईदाओं से छः और ईदाएँ बना सकता है। और जल्दी ही वह खेल का दायरा बढ़ा कर बीच वाले और नीचे वाले टुकड़ों की भी अदला-बदली करने लगता है। वह समुद्रतट वाली ईदा के सिर को होस्टल वाले उसकी छातियों के भाग को ढीठता से आगे फैलाई टाँग के साथ मिलाता है। वह ईदा के होस्टल वाले चेहरे को उसकी समुद्रतट वाली नंगी टाँगों और बहुत तंग पुलोवर के साथ इकट्ठा करता है। जब वह ईदा को ईदा के साथ जोड़ता है तो हर बार ईदा वहाँ होती है। फिर वह ईदा के समुद्र तट वाले सिर को होस्टल में उसके साथ रहने वाली लड़की के धड़ से और एक सहेली की समुद्रतट की नंगी टाँगों के साथ जोड़ता है। उसके बाद वह ईदा के होस्टल वाले चेहरे को उसकी सहेली की स्विमिंग कॉस्ट्यूम से ढँकी छातियों से और उसकी बहन की मिनी-स्कर्ट और उसकी टाँगों से जोड़ता है।

ईदा का सुशिष्ट सिर क्या वास्तव में उसकी माँसल देह और इन बहुत पतली टाँगों से मैल नहीं खाता?

क्या उसका ख़्यालों में डूबा होस्टल वाला शर्मीला चेहरा एक सहेली के छरछरे मध्यभाग और उसकी होस्टल की एक सहेली की अधिक बलिष्ठ छरहरी टाँगों के साथ ज़्यादा नहीं जँचता?

इनमें सबसे ज़्यादा कौन सी जँचती है?

ईदा को ईदा या ईदा को उसकी सहेलियों से मिलाने पर?

क्या होगा अगर अभी दरवाज़ा खुले और ईदा अन्दर आकर देखें कि वह ईदा का क्या कर रहा है?

बेहतर यही होगा कि वह चित्रों को किसी पुराने लिफ़ाफ़े में डालकर उन्हें कहीं छुपा कर रख दें, फिर कभी देखने के लिए।

कभी जब वह घर में अकेला होगा तो वह अपनी खो चुकी ईदा का खेल फ़ुरसत में ज़ारी रखेगा।

कभी न कभी वह जान ही जाएगा कि सही ईदा कौन-सी है, या थी।

हिटलर की फ़ौज के लिए कर्प मछलियाँ

ओता पावेल **अनुवाद : डागमार मारकोवा**

जर्मन कब्ज़े के आरम्भ में ही पापा का तालाब जब्त किया गया। ''क्या मज़ाल कि कोई यहूदी कर्प मछलियाँ पाल सके? हरगिज़ नहीं।'' ऐसा प्रधान ने पापा को समझाया। उस तालाब से पापा को ऐसा ही प्यार था जैसा किसी लड़की से होता है। तालाब इतना सुन्दर नहीं था जितना दक्षिणी बोहीमिया के तालाब होते हैं। वहाँ तो पानी से भाप उठता है, चारों ओर नरकट उगता है, दरयाई परिन्दे चिल्लाते हैं। लेकिन यह तालाब शहर के अंदर था। एक ओर बियरशाला, दूसरे ओर पहाड़ी पीपल, बाकी छोटे घर और कुटियाँ। लेकिन पापा बचपन में इस तालाब में किश्ती चलाते थे, उनके पिता, दादा और परदादा भी ऐसा किया करते थे, इसलिए पूर्वजों से भी बन्धन था। हाँ, इस तालाब में अच्छी कर्प मछलियाँ भी पलती थीं। इनमें कीचड़ की बदबू नहीं थी और आमदनी भी अच्छी होती थी। वैसे पापा जगह-जगह फ्रिज आदि बिजली का सामान बेचते थे।

शान्ति के ज़माने में पापा तालाब के किनारे घूमते थे, काग़ज़ की थैली में डबल रोटी के छोटे टुकड़े ले आते थे और कर्पों को खिलाते थे: ''लो बच्चो, लो, लो।'' कर्प तैरते आते, मुँह खोलते, रोटी खाकर पानी में डूब जाते थे। समीप बियरशाला से भी चारा मिलता था। ख़ूब मोटे हो जाते थे।

जब जर्मन आ गए तो इन मछलियों पर भी कब्ज़ा कर लिया जैसे सब कुछ पर कब्ज़ा कर लिया। हम से छीनने को कुछ और नहीं था। हमारे घर में सब कुछ खाने-पीने पर खर्च हो जाता था। पापा चालाक थे, कहते थे कि ऐसा ही होना चाहिए। लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता था। किसी ज़माने में वे ख़ूब कमाते थे और हम लोगों को सब कुछ मिलता था। जितना जो चाहो खाओ। चकोर का मांस पकता था, हैम मिलता था। लेकिन ऐसे भी दिन होते थे कि कुर्की होती थी, घर का सामान भी कुर्क हो जाता था। और हम सब बस खड़े देखते रह जाते थे। हम तीनों भाई एक और मौके पर भी सावधान खड़े होते थे। यह तब होता था जब रेडियो में राष्ट्रगान ''मेरा

वतन कहाँ'' आता था। पापा मेहमानों को गर्व से दिखाते थे हम कितने देशभक्त हैं।

मेरे पापा को इस देश से प्रेम था। माँ ईसाई थीं, उनके लिए स्वाभाविक था कि अपना वतन है लेकिन मेरे पापा के सैकड़ों पूर्वज सदियों से वतन की तलाश में थे। लड़ाई से पहले खाने की कुछ चीज़ें बुरे ज़माने के लिए जमा करने के बजाय पापा ने बचे खुचे पैसे से सुन्दर चेक मूर्ति ख़रीद ली। यही हमारी सारी संपत्ति थी। जब जर्मन आ गए तब हम मूर्ति और घर का सामान लेकर प्राग से बुश्तेह्रद चले गए जहाँ पापा का अपना ख़ानदानी घोंसला था और वहीं उनका अपना तालाब भी था।

जब प्रधान जी ने हमारे सामने उनको सूचना दी कि तालाब ज़ब्त हो गया है तो पापा नहीं झुके, कन्धा नहीं लटकाया, बस पट जवाब दिया : ''काश कि उन मछलियों के काँटे तुम लोगों के गलों में फँस जाएँ।'' प्रधान जी हैरान देखते रह गए लेकिन कुछ नहीं किया। पापा पर आफ़त ढाना नहीं चाहते थे।

फिर पापा और दोनों भाई क्लादनो शहर की खान में काम करते थे। पापा साइकिल चलाते थे, रास्ते में साइकिल चरमराती थी और अजीब सा गाना सुनाती थी। गाना समझ में नहीं आता था, बहुत अजीब था। शायद आदमी के अपमान का गाना था, शायद विरोध का गाना। शायद साइकिल पापा के मन की बातें बताता था।

फिर पापा के सिर पर आफ़त पड़ी।

हमें मालूम था कि पापा अपने तालाब के कर्पों को देखने जाते रहते हैं। हालाँकि हमारे पास अब रोटी कम थी वह अपने कर्पों को रोटी के छोटे टुकड़े खिलाते रहते थे। शायद उनको आशा थी कि लड़ाई के दौरान में कोई मछलियाँ नहीं पकड़ेगा और ये युद्धान्त तक ज़िन्दा रहेंगी। उजाले में भी और अँधेरे में भी तालाब देखने जाते थे। उन्हें सनक सी थी। एक दिन बाँध तक आए तो हैरान रह गए। दलदली किनारे पर फ़ौजी धूसर-हरी वर्दी पहने चार आदमी खड़े थे और मछलियाँ पकड़ रहे थे। पापा हैरान होकर कदम-ब-कदम उनके पास आए मानो पूछना चाहते हों कि उनके तालाब से मछली पकड़ने की इजाज़त किसने दी। बूट पहने एक फ़ौजी उनकी ओर मुड़ गया तो उसका हँसता हुआ चेहरा और वर्दी पर एस.एस. का बिल्ला नज़र आया। ''क्या चाहिए, यहूदी ? कर्प का माँस चखने का मन है क्या'' ? पापा चुप रहे तो एस.एस. वाले ने हुक्म दिया : ''आओ, लो।''

बालटी में से मछली निकालकर दलदल में फेंक दी। कर्प दलदल में तड़पने लगा। डूब रहा था, मर रहा था। चारों फ़ौजी कहकहे मारने लगे। उनमें से एक चिल्लाया : ''जाओ, यहूदी यहाँ से।'' पापा मुड़कर सीधे चले गए। वह किसी से नहीं डरते थे और जर्मनों ने उन्हें झुककर चलना अभी तक नहीं सिखाया थाा।

जर्मन कब्ज़ा सब जगह बुरा था, लेकिन शहर बुश्तेह्रद में शायद और भी बुरा था। लिदित्से के विनाश की ख़बर से सारी दुनिया स्तब्ध हुई।

लेकिन बुश्तेह्रद वालों ने, मेरे पापा, मम्मी, भाइओं ने और मैंने हम सबने लिदित्से जलते देखा था। पास से लिदित्से से चीखें सुनी थीं। लिदित्से का एक लड़का मेरा सहपाठी था और अचानक स्कूल में उसकी जगह ख़ाली रह गई। हम लोग वहाँ फुटबाल खेला करते थे, पापा के दोस्त वहाँ रहते थे—और अब संगीन चढ़ाए जर्मन हमारे घर की तलाशी लेने घर मे घुस आए। अब मेरी दुबली-पतली सुनहरे बालों वाली मम्मी को बरबाद किए हुए लिदित्से के खेतों पर काम करना पड़ता था। वहाँ से रोती हुई वापस आती थीं क्योकि लिदित्से के गोली मारे गए पुरुष वहीं दफ़न थे और उनकी कब्रों पर उनके शरीरों और ख़ून से ख़ासकर घनी घास उगती थी। हम लिदित्से की बरबादी कभी नहीं भूल सकते। वह सब हमारे दिलों में चुभ गई है जैसे चिंची खाल में चुभती है। बस इस चिंची का जर्मन चूषक है और पैर हैं और हमारे दिलों में हिटलर का काला स्वस्तिक चुभ गया।

पापा को बड़ा धक्का लग गया। अब उनकी आँखों में वही पुरानी सैकड़ों सालों की यहूदी उदासी नज़र आने लगी। तालाब के पास आना बन्द कर दिया। अब विश्वास नहीं रहा कि कर्प भविष्य में फिर उनके होंगे।

फिर बड़ी आफ़त टपक पड़ी। मेरे भाइयों को नज़रबन्दी कैम्प में जाना पड़ा। हम तीनों, पापा, मम्मी और मैं घर पर रह गए और कभी कभी तेरेज़ीन कैंप में उनको बीस किलो के पैकेट भेज सकते थे। पापा इसके लिए पैसा जमा करने की कोशिश करते थे। मैं बुश्तेह्रद और आसपास के गाँवों में खाने की चीज़ें माँगने जाता था। मैं कमज़ोर और दुबला पतला था, कोई मुझ पर ध्यान नहीं देता था। कभी कभी बहुत अच्छे लोग मिल गए लेकिन दूसरी किस्म के लोग भी मिल जाते थे। जाड़ों में एक गाँव से दूसरे गाँव भटकता था, सर्दी लगती थी। बड़े घरों के फाटकों पर दस्तक देता था, एक बड़े घर के दरवाज़े पर दो घंटे तक इन्तज़ार किया, फिर मालकिन ने थोड़ा सा आटा दे दिया, कभी कभी घर बहुत नहीं लाया, लेकिन मम्मी ने हर बार मेरी तारीफ़ की। बालों पर हाथ फेरकर कहती थीं—''तू मेरे छोटे व्यापारी।'' सब से बड़ी ख़ुशी तब होती थी जब मुझे किसी घर से भीख की सिगरेट मिल जाती थी। तब मम्मी और पापा एक दूसरे के सामने बैठे एक दूसरे को बारी बारी से वही सिगरेट पिलाते थे और युद्ध भविष्य में समाप्त होने की बातें करते थे।

ठीक क्रिसमस से पहले पापा को नज़रबन्दी कैम्प में बुलाया गया। हमारा हाल तब बहुत बुरा था। अम्मी रोती रहती थीं कि उनको कुछ खाने को साथ ले जाने के लिए कोई चीज़ साथ नहीं दे पाएँगी।

जाने से दो दिन पहले पापा घर के सामने बर्फ़ हटा रहे थे। हम यहूदी समुदाय के कुछ करज़दार थे, समुदाय के कुछ लोग आने वाले थे। घर के सामने कार रुक गई। तीन आदमी निकले। पहले ने तुरन्त शुरू किया : ''देखो चमत्कार, यहूदी कुछ काम कर रहा है।'' और फापा बोले: ''जब कि तुम लोग सुस्ती करते हो। जय शैतान।''

शायद पापा ख़ुफ़िया पुलिस वालों को कुछ पसन्द आए। उनमें से एक मूँछवाला बोला : ''तुम डरपोक नहीं लगते। चलो हमें दिखाओ बन्दूक़ें और मशीनगनें कहाँ छिपाए रखते हो।''

फिर हमारे घर की ख़ूब तलाशी ली। यहूदी कमरे में सजाया हुआ क्रिसमस पेड़ देखकर हैरान रह गए, यहाँ तक कि मूँछवाला मेरी ईसाई मम्मी को देखकर थोड़ा मुस्कराया। फिर अटारी पर चढ़ गए और कोने में छिपी हुई काग़ज़ में लपेटी हुई चेक मूर्ति मिली।

तब पापा ने मज़ाक करना बन्द कर दिया, मूँछवाले ने मुस्कराना बन्द कर दिया। पापा को चेक मूर्ति ऊपर से नीचे फेंककर कुल्हाड़ी से चूर-चूर कर देनी पड़ी। फिर तीनों चले गए।

मम्मी ने कहा कि फिर भी शरीफ़ जर्मन भी मिलते हैं। लेकिन पापा घिन से थूक गए। अगले दिन पता चला कि तथाकथित शरीफ़ जर्मनों ने उसी दिन दो यहूदी परिवारों को गोली मार दी थी।

फिर हमने समय से पहले क्रिसमस मनाया। अगली सुबह पापा को जाना था। क्रिसमस पेड़ पर मोमबत्तियाँ जल रही थीं, चाँद चमक रहा था और कमरे में वन की सुगंध थी। पापा को न जाने कहाँ से मेरे लिए उतरन के जूते और स्केट मिल गए। उनकी पुरानी इच्छा थी कि आइस हाकी का खिलाड़ी बनूँ। और मैंने स्कूल के लड़कों से दो पैकेट सिगरेट का इन्तज़ाम किया। मम्मी और पापा हँसमुख चेहरा बनाए थे, शायद मेरी वजह से ऐसा किया, ताकि मुझे उस शाम की अच्छी याद रहे। उनकी मन:स्थिति ज़रूर ख़राब थी—शायद उनके जीवन की अन्तिम साथ बिताई हुई शाम होनी थी।

रात में किसी ने मुझे झकझोरा : ''उठो, भई, उठो।''

पापा कभी कभी मुझे भई कहते थे। मन उठने का नहीं था, कमरे में बहुत सर्दी थी। दाँत खटक रहे थे, काँप रहा था माथा। मैंने कपड़े पहन लिए, मम्मी ने मुझे कोट पहनाया, टोपी लगाई। कुछ होने वाला था, जिसका मुझे पता बिलकुल नहीं था। मम्मी ने कहा : ''पापा तुम्हारा इंतज़ार आँगन में कर रहे हैं।''

मैं सीढ़ी उतर गया। पापा हाथ में कुल्हाड़ी और बहुत से बोरे लिए नीचे खड़े

थे। मैं डर गया। पापा ने साथ चलने का इशारा किया। जमी हुई बर्फ़ पर मैं उनके पीछे चल दिया। पापा नहीं बोले और तालाब की ओर चले। पेड़ों के पीछे चमकता हुआ चाँद नज़र आया। सन्नाटा, बिलकुल सन्नाटा।

पापा जमी हुई बरफ़ खटखटाने लगे। कुल्हाड़ी के वार ने जवाब दिया। फिर पापा मेरी ओर मुड़ गए। ''कर्प साँस नहीं ले सकते हैं। जमी हुई बर्फ़ में छेद बनाना है।''

बर्फ़ से ढका हुआ तालाब परीकथा का सा लगा। सन्नाटा। चमकता चाँद । जमी हुई बर्फ़ पर कुल्हाड़ी की मार की प्रतिध्वनि गूँज गई। मैं काँप गया। पापा बोले: ''यह हम ठीक कर देते हैं।''

तब जमी बर्फ़ काटने लगे। बर्फ़ीले पानी के छोटे फव्वारे उनके चेहरे पर छिटक रहे थे।

जमी हुई बर्फ़ पर कुछ कदम लिए। बर्फ़ का टुकड़ा उकेर देकर पानी में से खींच निकाला। मेरी ओर मुड़कर बोले : '' ज़रा इन्तज़ार करना है, यार। कुछ मिनट बाद तैरते आएँगे। मैं मन्त्रमुग्ध सा पारदर्शी जल देख रहा था, जिस में हर रोड़ा, तल की हर मोड़ दिखाई देती थी। जल काँप रहा था और हवा में से पानी में जिलाने वाले बुलबुले उतर रहे थे। बर्फ़ में फँसे हुए कर्पों के लिए हवा का सोता सा लगा।

पापा समझ गए। अचानक जल में अंडाकार छाया हमारे नीचे तैर गई और फिर वापस आई।

कर्प, और कैसा कर्प। अपना गोल मुँह पानी में से निकालकर, सतह से ऊपर भी निकलकर हवा खायी। तुरन्त अगला कर्प तैरता आया। हम मन्त्रमुग्ध से देखते रहे । यह कर्पों को ज़रा भी नहीं खलता था। कुछ सेकंड में छेद कर्पों से भर गया और दूसरे आते जा रहे थे। उस मिनट पापा पर कोई अनजाना जादू हो गया। बर्फ़ पर घुटने टेककर उन्होंने आस्तीनें ऊपर मोड़ लीं, कर्पों के सिरों पर हाथ फेरने लगे और कुछ बड़बड़ाते उनको लाड़-प्यार करने लगे। कर्प उनके हाथ के पास बच्चों जैसे जमा होते थे , चाँद की रोशनी में चाँदी के और सुनहरे से लगते थे, पवित्र जैसे चमकते थे। बाद में ऐसी मछलियाँ कहीं नहीं देखीं।

फिर पापा उठ खडें हुए। चाँद उनके चेहरे पर प्रकाश डाल रहा था, और उनका चेहरा ख़ुश लगा। उन्होंने बोरों से छिपे हुए जाल निकाल लिए। एक जाल निकालकर बर्फ़ में बनाए हुए छेद में से एक कर्प निकाल लिया। तब मैं समझ गया और बहुत डर गया। मैंने उनकी आस्तीन खींची।

''पापा, यहाँ से चलें। अगर हमें पकड़े तो मार डालेंगे।''

उन्होंने मुझे अन्यमनस्क निगाह से देखा। आजकल मुझे मालूम है कि उनके

लिए उस मिनट जीना-मरना बराबर था। जर्मनों के लिए अपने कर्प छोड़ना उनके बस का नहीं था।

अब कर्पों से लाड़ प्यार नहीं किया। बोरों में रखते थे। ये बोरे हम घर ले जाते थे और मम्मी कर्प बर्तनों में बाँटने लगी। हमारा घर छत से तहख़ाने तक बर्तनों से भर गया। कर्प बालटियों में, टब में, डोलों में, पुराने नाँदों में तैरने लगे।

पौ फटते ही चाँद डूब गया और सर्दी तेज़ हो गई। हम दोनों ठिठुर गए थे। चूँकि भीगे हुए बोरे कन्धों पर उठा कर लाए थे, मम्मी को हमारे पीठ से जमी हुई बर्फ़ छीलनी पड़ी। लेकिन तालाब ख़ाली था, कर्प अपने मालिक के पास चले आए।

सुबह पापा प्राग चले गए। हाथ में अटैची पकड़े थे। अपनी ज़िन्दगी में पहली बार कन्धे लटका दिए थे। लेकिन मेरी निगाह में उस रात वह बहुत ऊँचे हो गए थे।

फिर माँ को और मुझे कर्पों के बदले में लोगों से खाने की चीज़ें मिलती थीं। कर्प मेरे लिए किलों के भी दरवाज़े खुलवाते थे। जब भी मैंने थैले में मोटा सा कर्प दिखा दिया तो गृहिणी ख़ुश होकर चर्बी, धुआँया हुआ मांस, आटा, चीनी, सिगरेट आदि देती थी। मुझे अन्दर बुलाया गया, मुझे दूध के साथ कॉफ़ी मिली और क्रिसमस के पकवान भी खिलाए गए। अब मेरा राजा जैसा स्वागत होता था। कर्पों ने मेरे लिए रास्ता खोल दिया। यह मेरे लिए युद्ध का सब से दानशील क्रिसमस था।

जब नया सल शुरू हुआ तो मछुए मछलियाँ पकड़ने आए। मछुआरों के साथ जर्मन फ़ौजी तालाब के किनारे घूमते फिरते थे। जर्मन फ़ौज कर्पों पर कब्ज़ा लेने आ गई।

मैं दूसरे लड़कों के साथ घाट पर खड़ा इन्तज़ार कर रहा था कि नतीजा क्या निकलेगा। शुरू में बड़ी वाहवाही, घाट पर बाजा बजा, सब कुछ फ़ौज के हित में लगा। लेकिन तालाब में कुछ नहीं मिला । यह किसी की समझ में नहीं आया। और मैं सोच रहा था कि बाजा मेरे पिता के सम्मान में बज रहा है। जर्मनों का कब्ज़े में लिया हुआ तालाब ख़ाली कर दिया गया था।

❑❑❑